

RNI क्र. 50309/85/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 अप्रैल 2025

अंक 463 ● अप्रैल 2025

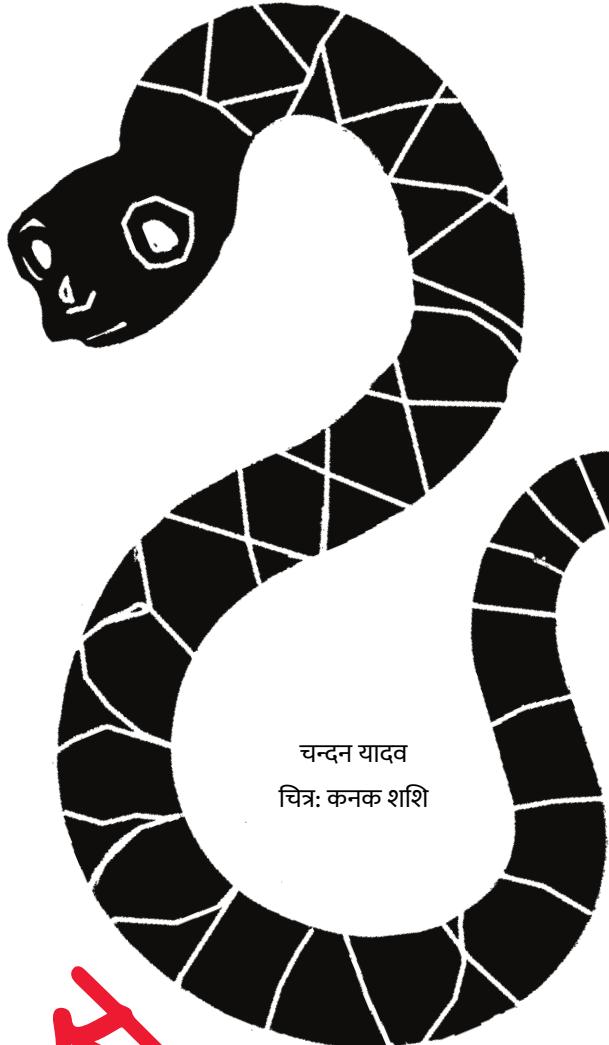
चक्रमङ्क

बाल विज्ञान पत्रिका

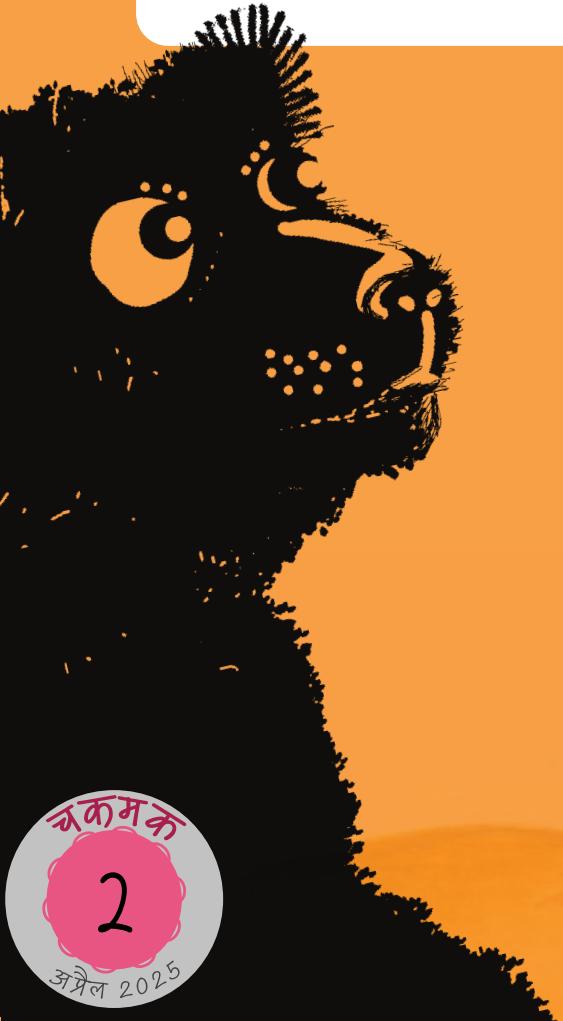
मूल्य ₹ 50

1

इतने सारे बाल हैं तो फिर
नाम नहीं क्यों 'बालू'
बालू नहीं तो जो रंग पाया
फबता उस पर 'कालू'
साँप की चेसी बातें सुनकर
हँसकर बोला भालू
फिर हम तुझको 'सरकू' कहते
या कहते 'जहरालू'



सरकू



चकमकँ

इस बार

- | | |
|---|----|
| सरकू - चन्दन यादव | 2 |
| नए पत्ते - भूरी के बाल - शाहिमा | 4 |
| मेहमान जो कभी गए ही नहीं - भाग 10 | 6 |
| - आर स्स रेशू राज, र पी माधवन व साथी | 8 |
| जलियाँवालेबाग में वसन्त - सुभद्राकुमारी चौहान | 10 |
| खुजलाने से राहत क्यों मिलती है? | 11 |
| गणित है मजेदार - क्या खास है 2025 में | 15 |
| - आलोका कान्हेरे | 18 |
| जलियाँवाला बाग - अमनदीप संधू | 22 |
| फिल्म चर्चा - माय नेबर तोतोरो - निधि गुलाटी | 24 |
| गुलाबाँस का जंगल - संज्ञा उपाध्याय | 25 |
| किताबें कुछ कहती हैं... | 26 |
| भूलभूलैया | 30 |
| क्यों-क्यों | 32 |
| आज रंग है... - कुलदीप ढास | 34 |
| चित्रपटेली | 36 |
| माथापच्ची | 43 |
| मेरा पत्रा | 44 |
| तुम भी जानो | |
| पलाशिया - कनक शशि | |



आवरण चित्र: शुभम लखेरा

सम्पादक	डिजाइन
विनता विश्वनाथन	कनक शशि
सह सम्पादक	सलाहकार
कविता तिवारी	सी एन सुब्रह्मण्यम्
विज्ञान सलाहकार	शशि सबलोक
सुशील जोशी	वितरण
उमा सुधीर	झनक राम साहू

एक प्रति : ₹ 50
सदस्यता शुल्क
(रजिस्टर्ड डाक रहित)
वार्षिक : ₹ 800
दो साल : ₹ 1450
तीन साल : ₹ 2250

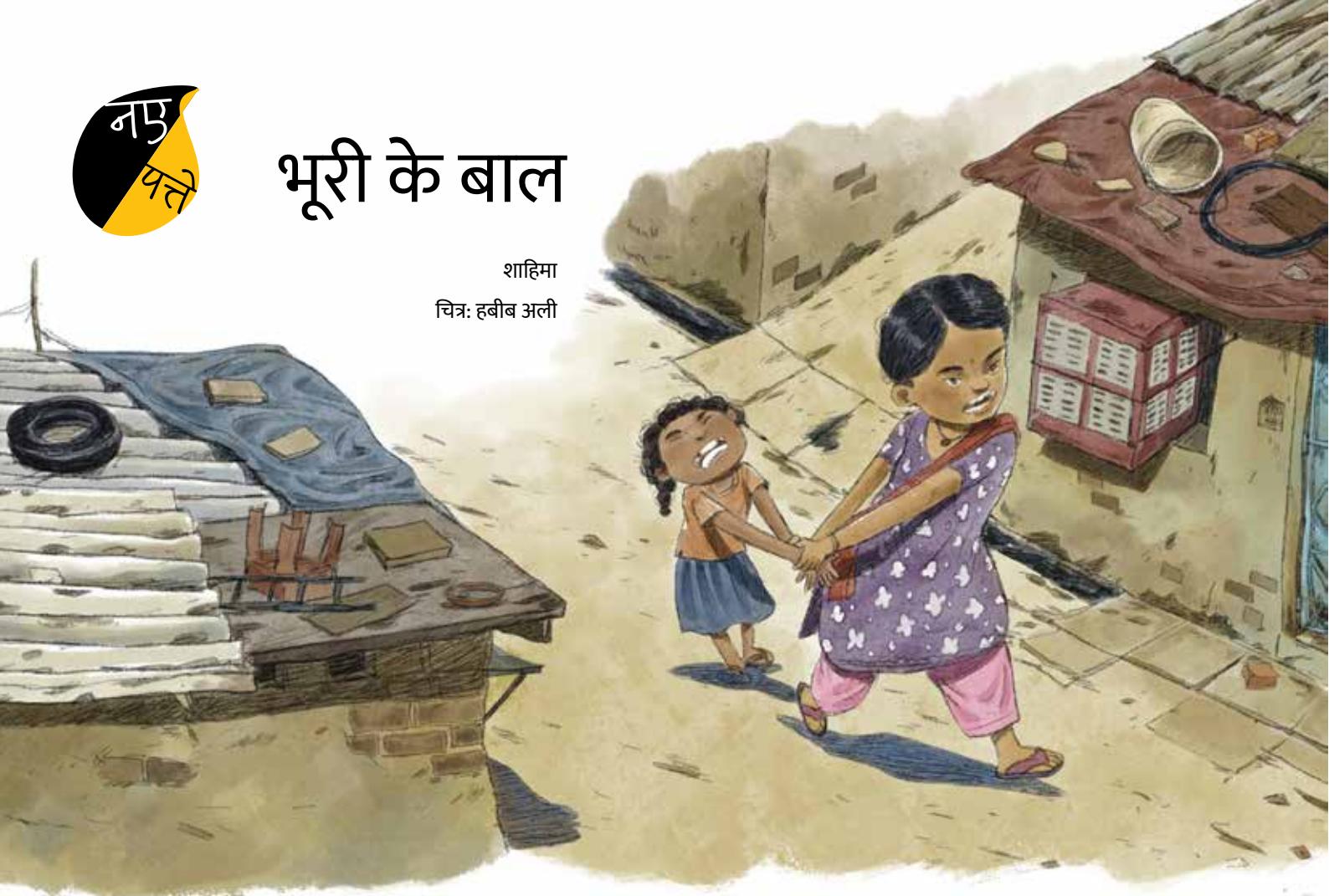
चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीआँडर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - रेटेट बैंक ऑफ इंडिया, महारीनगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर जरूर दें।

फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmак@eklavya.in,
वेबसाइट: <https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmак-magazine>

भूरी के बाल

शाहिमा

चित्र: हबीब अली



बरसात के महीने में नाली भरना हमारे यहाँ रिवाज-सा है। इस बार भी यह रिवाज कायम था। छह दिन तक लगातार बारिश के बाद कमला को टाइम ही नहीं मिला कि वह अपनी बेटी भूरी को नहलाती। भूरी अभी दस साल की है। बारिश के दिनों में कमला के घर में पानी भर जाता है। वह घर को सँभाले या भूरी को, उसे खुद समझ नहीं आता।

बारिश बन्द हुए दो दिन से ज्यादा हो चुके हैं। आज मौसम थोड़ा साफ दिखा तो कमला ने सोचा कि भूरी को नहला ही देती हूँ। लेकिन भूरी घर पर टिकती ही नहीं है। वह बाहर खेलती हुई दिखी। कमला उसे वहाँ से ज़बरदस्ती घसीटने लगी। भूरी को शर्म भी आ रही थी कि कोई उस पर हँसे ना! भूरी को समझ नहीं आया कि माँ मुझे

घर ले जाने की जगह मौसी की गली में क्यों ले जा रही है। कमला भूरी की मौसी से इजाजत ले उसे उसकी छत पर ले गई। बारिश के दिनों में घर के अन्दर नहला भी तो नहीं सकते। ऐसे भी कमला के घर में नहाने की जगह नहीं है, जगह बनानी पड़ती है। आजकल वहाँ पर भी गन्दे पानी की बदबू भरी होती है। अब तक भूरी को समझ आ गया था कि माँ उसे यहाँ नहलाने क्यों लाई है।

कमला ने उसकी बाजू पकड़ी और उसे एक छोटे-से बाथरूम के अन्दर कर दिया। वह उसे नहलाने का सारा इन्तज़ाम कर चुकी थी। अपने बैठने के लिए भी उसने एक मचिया ले लिया था। जैसे ही भूरी के बाल खुले तो कमला ने पाया कि वे काफी गन्दे हो चुके हैं। इसके बालों का क्या किया जाए। उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था। वहाँ पर केश

निखार साबुन के अलावा और कोई साबुन नहीं था। उसने पहले भूरी के बालों को गीला किया। फिर उस पर साबुन मला। लेकिन साबुन घिसने के बावजूद भी झाग बन नहीं पा रहा था। अन्त में उसने साबुन को मग्गे में पानी मिलाकर घोल लिया। फिर बालों पर डाला। लेकिन उससे भी कोई खास फर्क नहीं पड़ा।

कमला परेशान बैठी थी। तभी उसने प्रिया को उधर आते देखा। प्रिया कहीं भूरी के गन्दे बालों को देख ना ले। यह सोच कमला ने भूरी के बालों को छुपा लिया। लेकिन प्रिया ने भूरी को देख ही लिया और कहने लगी, “मौसी, आप ना भूरी के बालों को ‘हैंड एंड शोल्डर’ शैम्पू से धोएँ। उसी से कुछ हो सकता है। मैं भी इसी शैम्पू से अपने बाल धोती हूँ।”

उन्होंने पूछा, “कितने का आता है ये शैम्पू?”

प्रिया ने कहा, “पाउच ले लो। एक रुपए वाला भी आता है और पाँच रुपए वाला भी। वैसे इसके बालों को देखकर लग रहा है कि पाँच वाले चार पाउच लग जाएँगे।”

बिना देरी किए कमला ने पाँच रुपए वाले चार शैम्पू प्रिया से मँगवाए। कमला ने उस शैम्पू को भूरी के बालों में एक-एक करके डाला। दो पाउच शैम्पू इस्तेमाल करने के बाद भी कोई फर्क नहीं पड़ा। फिर उसने बाकी के दो पाउच भी लगा दिए। भूरी के बालों ने चारों शैम्पू सोख लिए। मगर कुछ हुआ नहीं। कमला खुद मचिया पर बैठी थी और भूरी को सामने उकड़ू करके बिठा रखा था। उसने उसकी गर्दन झुकवा रखी थी। वह फिर परेशान हो उठी। उसे लगा कि शायद दुकानवाले ने प्रिया को एक्सपायरी डेट वाला शैम्पू दे दिया हो।

उन्होंने एक बार फिर प्रिया को बुलाया और कहा, “इस शैम्पू से तो कुछ नहीं हुआ।”

प्रिया ने कहा, “मौसी, आप मेडिकल शैम्पू ट्राई कर लीजिए। उसमें ज्यादा झाग होता है।”

प्रिया ने फिर मेडिकल शैम्पू लाकर घर से निकली थी। उसके चालीस रुपए तो शैम्पू में ही चले गए थे। शैम्पू आया और कमला ने भूरी के बालों को मसलकर धोना शुरू कर दिया। गर्दन झुकाए-झुकाए वह अलग परेशान थी। लेकिन मेडिकल शैम्पू ने काम किया और भूरी के बाल साफ हो गए। भूरी ने अब चैन की साँस ली।

प्रिया जा चुकी थी। कमला को प्रिया, शैम्पू और भूरी के बाल तीनों पर गुस्सा आ रहा था। क्योंकि इतनी सी ही देर में कमला के आधे किलो दूध के पैसे झाग हो चुके थे। खैर, उसे इस बात की खुशी थी कि अब भूरी के बाल और बच्चों की तरह साफ हैं और वह सुन्दर भी दिखने लगी है।



शाहिमा पिछले छह साल से अंकुर के किताबघर से जुड़ी हैं। वह दक्षिणपुरी की सुभाष बस्ती में रहती हैं और राजकीय उच्चतम माध्यमिक कन्या विद्यालय में पढ़ती हैं। कहानियाँ पढ़ना और लिखना उनकी खासियत है।



मेहमान जो कभी गए ही नहीं

अन्य देश से आए और हमारे देश में सफलता से बसे हुए आक्रामक पौधों की सीरिज़ की अगली कड़ी...

आर एस रेश्वर राज, ए पी माधवन, टी आर शंकर रमन, दिव्या मुडप्पा, अनीता वर्गीस और अंकिला जे हिरेमथ
रूपान्तरण व अनुवाद: विनता विश्वनाथन

चित्र: रवि जाभेकर

रगतूरा/स्फ्रिकन ट्यूलिप

वैज्ञानिक नाम: स्पैथोडिया
कैम्पनुलेटा
(*Spathodea campanulata*)

मूल: उष्णकटिबन्धीय पश्चिमी अफ्रीका

कैसे पहुँचा: अपने शानदार नारंगी-लाल फूलों के लिए इस सजावटी पेड़ को उन्नीसवीं सदी के अन्त में लाया गया।

रगतूरा मध्यम से बड़े आकार का एक पेड़ है। यह 35 मीटर की ऊँचाई तक बढ़ सकता है। इसका तना स्तम्भ जैसा होता है। इसके बट्रेस (विशाल और चौड़ी जड़ें जो जमीन के ऊपर उगती हैं और तने को सहारा देती हैं) हो सकते हैं। तने से मोटी शाखाएँ निकलती हैं जिनसे फैला हुआ क्राउन बनता है। इसकी छाल स्लेटी-कत्थई रंग की और चिकनी होती है। रगतूरा के संयुक्त पत्ते (जिनके अनेक पत्रक होते हैं) एक-दूसरे के सामने होते हैं। ये चमकदार, गहरे हरे रंग के और लगभग 50 सेंटीमीटर लम्बे होते हैं। हर पत्ते में 11-15 जोड़े अण्डाकार पत्रक होते हैं जो लगभग 15 सेंटीमीटर लम्बे और लगभग 7.5 सेंटीमीटर चौड़े होते हैं।

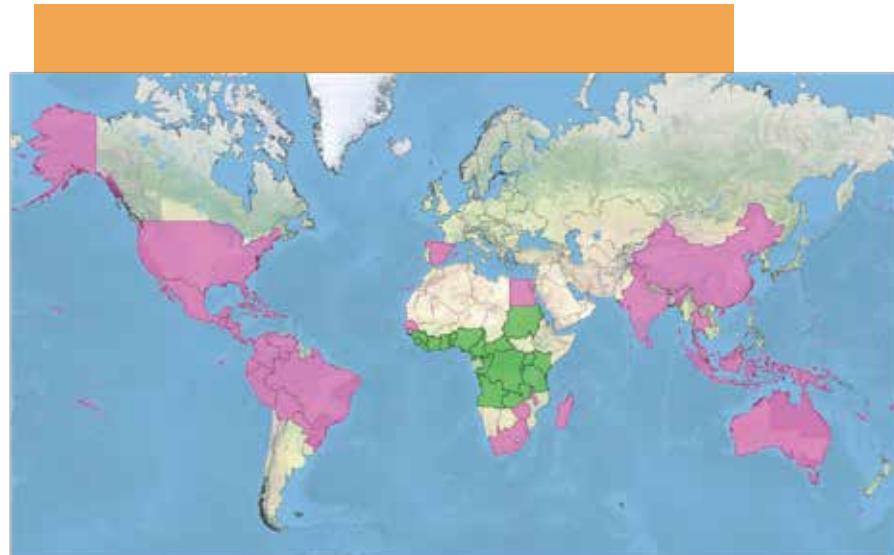
रगतूरा के फूल चटक नारंगी-सिन्दूरी रंग के होते हैं। ये कटोरे के आकार के होते हैं और घने गुच्छों में खिलते हैं। इसके फल लकड़ीनुमा फलियाँ होती हैं। ये लगभग 17-25 सेंटीमीटर लम्बी और नुकीले सिरों वाली होती हैं। इनमें 500 तक कागजनुमा बीज होते हैं जो हवा के ज़रिए फैलते हैं।



असर

रगतूरा खुले मैदानों और बंजर खेतों में तेज़ी-से फैलता है। ये बागानों, पारिस्थितिक रूप से असन्तुलित जंगलों (disturbed forests) और सघन जंगलों के बीच के गैप या खाली जगहों में भी फैल सकता है। तेज़ी-से बढ़ने के कारण ये घने झुण्ड बना लेता है। इस तरह ये उस जगह की प्रमुख किस्म बन जाता है और अन्य पौधों को बढ़ने से रोकता है।

रगतूरा के फूलों के रस और कलियों पर मौजूद लस (mucilage) कीड़ों के लिए विषेला होता है। इन कीड़ों में बिना डंक वाली मधुमक्खियाँ भी शामिल हैं। पेड़ों पर लगे फूलों या फिर गिरे हुए फूलों को भी नीलगिरी लंगूर और काकड़ खाते हैं। इसके बीजों को तोते और गिलहरियाँ खाती हैं।



प्रवेश

स्वाभाविक

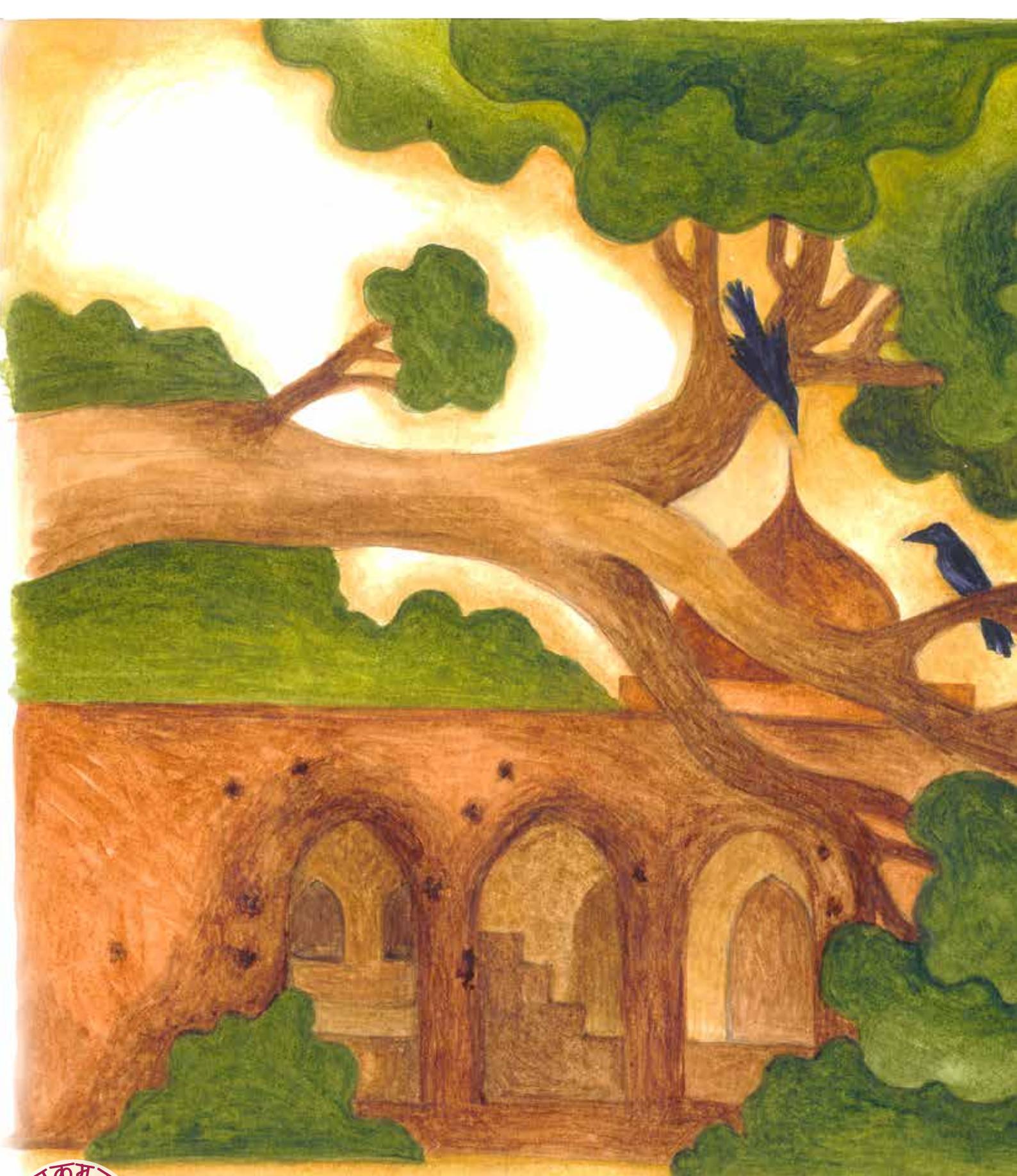
मूल जगह दर्ज नहीं

बन्दोबस्त

छोटे पेड़ों को जड़ों से उखाड़ना असरदार हो सकता है। बड़े पेड़ों के मामले में ये तरीका कम असरदार होता है क्योंकि मिट्टी में रह गए जड़ों के दुकड़ों से पौधे दोबारा उग सकते हैं।

नियंत्रण के रासायनिक तरीकों को दुनिया के कुछ हिस्सों में आजमाया गया है। इनमें छोटे पेड़ों के तनों में शाकनाशक (ट्राइक्लोपैर + पिक्लोरैम) का इंजेक्शन, या फिर बड़े पेड़ों को काटकर दूँठ पर शाकनाशक पोतना भी शामिल हैं। क्यूबा में बतौर जैविक नियंत्रण पेड़ों का एक रोगजनक कुकुरमुत्ते से टीकाकरण (सेराटोसिस्टिस प्रजाति) किया गया है। ये तरीका कम उम्र के पेड़ों में असरदार रहा है। लेकिन इसे बड़े पैमाने पर किया नहीं गया है।





କମଳ

8

�ସ୍ରେଲ 2025



जलियाँवाले बाग में वसंत

सुभद्राकुमारी चौहान
चित्र: प्रोइति रँय

यहाँ कोकिला नहीं, काक हैं शोर मचाते
काले-काले कीट, भ्रमर का भ्रम उपजाते।

कलियाँ भी अधिखिली, मिली हैं कंटक-कुल से
वे पौधे, वे पुष्प, शुष्क हैं अथवा झुलसे।

परिमल-हीन पराग दाग-सा बना पड़ा है
हा! यह प्यारा बाग खून से सना पड़ा है।

आओ प्रिय ऋतुराज! किन्तु धीरे-से आना
यह है शोक-स्थान यहाँ मत शोर मचाना।

वायु चले पर मन्द चाल से उसे चलाना
दुख की आहें संग उड़ाकर मत ले जाना।

कोकिल गावे, किन्तु राग रोने का गावे
भ्रमर करे गुंजार, कष्ट की कथा सुनावे।

लाना संग में पुष्प, न हों वे अधिक सजीले
हो सुगन्ध भी मन्द, ओस से कुछ-कुछ गीले।

किन्तु न तुम उपहार-भाव आकर दरसाना
स्मृति में पूजा हेतु यहाँ थोड़े बिखराना।

कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा-खाकर
कलियाँ उनके लिए गिराना थोड़ी लाकर।

आशाओं से भरे हृदय भी छिन्न हुए हैं
अपने प्रिय परिवार देश से भिन्न हुए हैं।

कुछ कलियाँ अधिखिली यहाँ इसलिए चढ़ाना
करके उनकी याद अश्रु की ओस बहाना।

तड़प-तड़पकर वृद्ध मरे हैं गोली खाकर
शुष्क पुष्प कुछ वहाँ गिरा देना तुम जाकर।

यह सब करना, किन्तु बहुत धीरे-से आना
यह है शोक-स्थान यहाँ मत शोर मचाना।



खुजलाने से राहत क्यों मिलती है?



मच्छर के काटने या एलर्जी के कारण खुजली होने पर खुजलाने की इच्छा हम सभी को होती है। और खुजलाना बेहद सन्तोषजनक भी लगता है। पर खुजली करने से इतनी राहत क्यों मिलती है?

अब तक माना जाता था कि खुजली करने से त्वचा से कीटाणु या एलर्जीजनक (allergens) जैसे बाहरी तत्व हट जाते हैं। लेकिन वैज्ञानिकों को सन्देह था कि इसके पीछे कोई और कारण भी हो सकता है। ऐसा इसलिए, क्योंकि कई बार खुजली तब भी बनी रहती है जब असली कारण दूर हो चुका होता है।

इसे परखने के लिए शोधकर्ता चूहों को एक सिंथेटिक एलर्जीकारक के सम्पर्क में लाए। इससे उनकी त्वचा पर एलर्जी प्रतिक्रिया (allergic reaction) हुई। जब चूहों ने खुजलाया, तो उनकी त्वचा में सूजन आ गई और वहाँ बड़ी संख्या में न्युट्रोफिल्स (एक प्रकार की प्रतिरक्षा कोशिकाएँ) जमा हो गई। दिलचस्प बात यह थी कि जिन चूहों को खुजली करने से रोका गया, उनमें सूजन और प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया काफी कम रही। यानी खुजलाना सिर्फ जलन मिटाने का तरीका नहीं, बल्कि शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली का एक हिस्सा भी हो सकता है।

अध्ययन के दौरान जब चूहों ने खुजलाया, तो उनकी तंत्रिका कोशिकाओं ने ‘पदार्थ पी’ (Substance P) नामक रासायनिक सन्देशवाहक जारी किया। यह पदार्थ मास्ट कोशिकाओं (सफेद रक्त कोशिकाओं का एक प्रकार) को सक्रिय करता है। ये मास्ट कोशिकाएँ फिर न्युट्रोफिल्स को सक्रिय करती हैं। इससे सूजन बढ़ जाती है और प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया भी बढ़ जाती है। यानी कि खुजली करने से सिर्फ आराम ही नहीं मिलता, बल्कि यह शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को भी सक्रिय करती है। और इस तरह यह त्वचा को संक्रमण से बचाने में मदद करती है।

लेकिन अत्यधिक खुजलाने से सूजन और बढ़ सकती है। यही कारण है कि एकिज़मा जैसी त्वचा की समस्याएँ बार-बार खुजली करने से गम्भीर होती जाती हैं। हालाँकि, यह अध्ययन चूहों पर किया गया था, लेकिन इससे मनुष्यों के स्वास्थ्य के बारे में नई जानकारी मिलती है। यदि हम समझें कि खुजली और प्रतिरक्षा तंत्र कैसे काम करते हैं, तो इससे लम्बे समय से चल रही खुजली (chronic itching) और त्वचा की समस्याओं के बेहतर इलाज में मदद मिल सकती है।

झोत फिचर्स से साभार



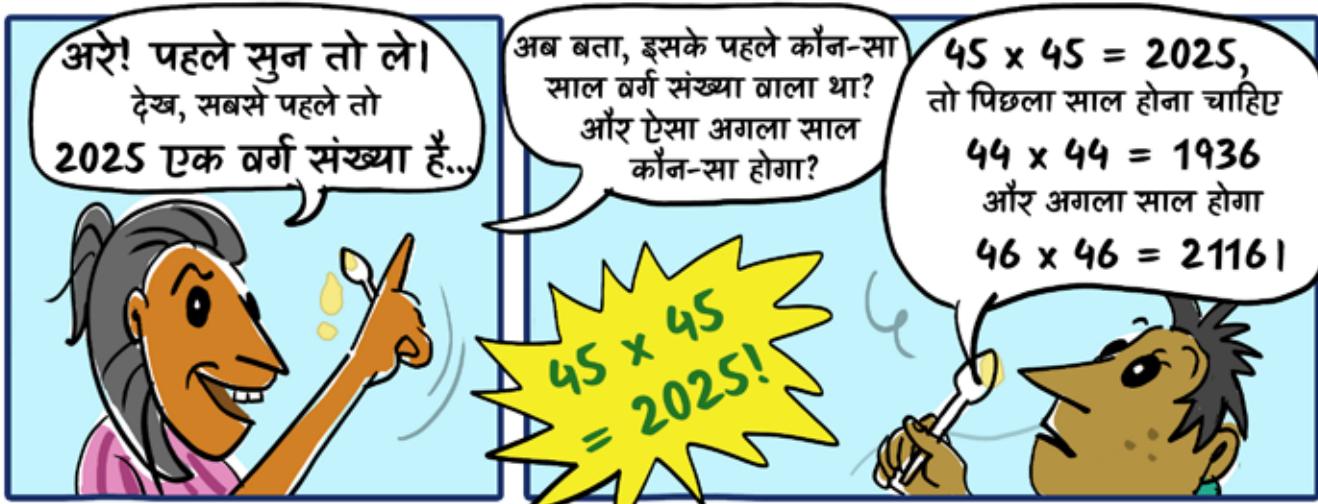
गणित है

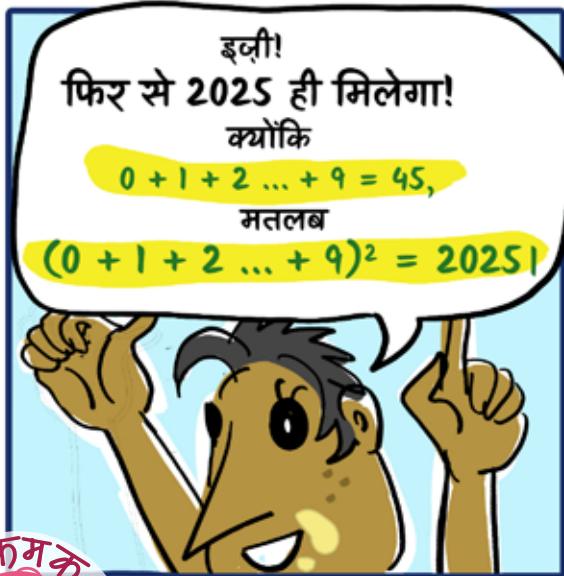
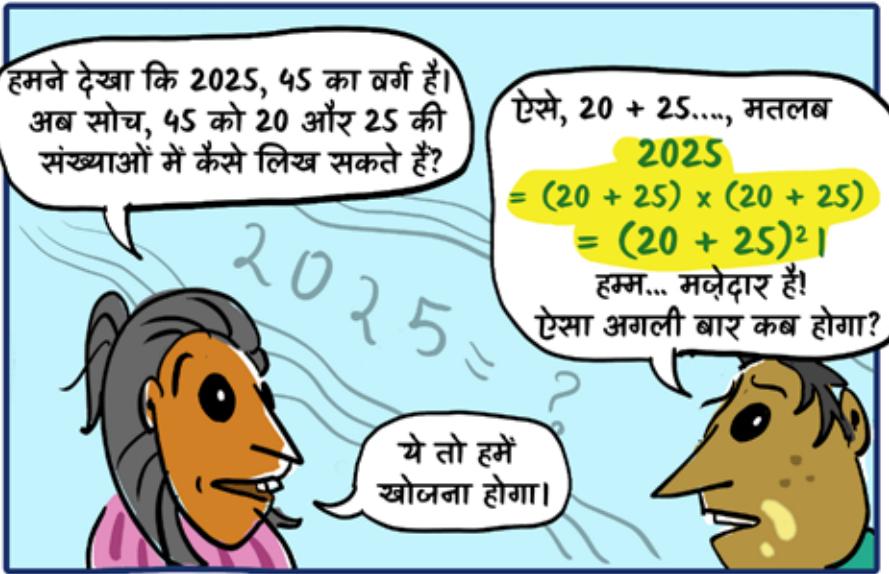
क्या खास है 2025 में?

आलोका कान्हेरे

अनुवाद: कविता तिवारी, चित्र: मधुश्री

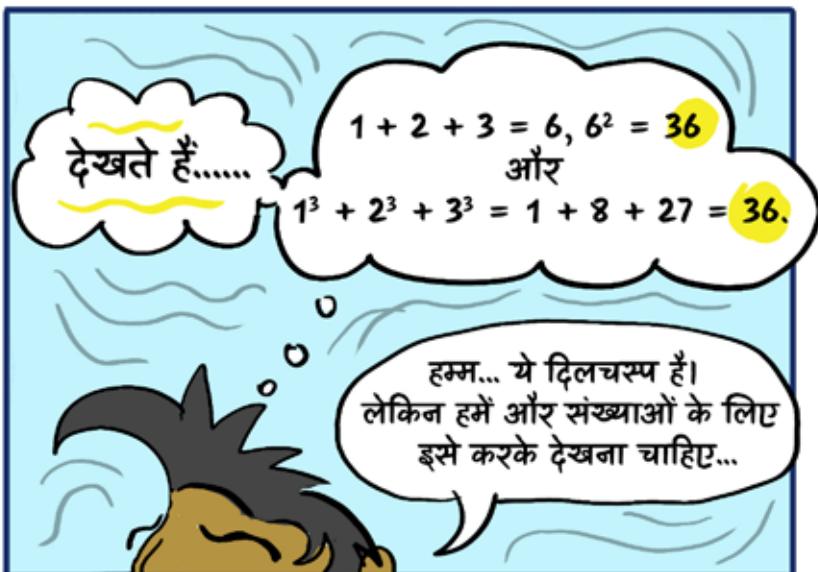
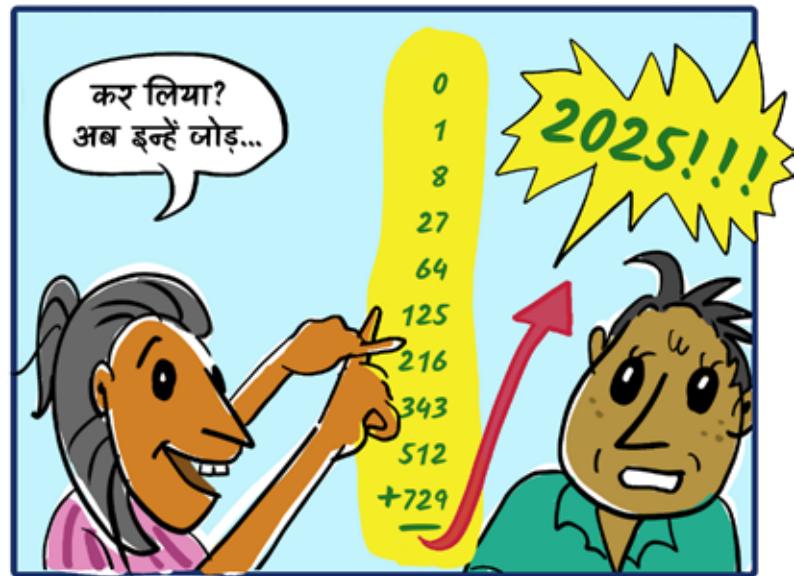
मवेदार





क्रकमक







अगर तुम कभी अमृतसर जाओ, तो जलियाँवाला बाग ज़रूर देखना। जलियाँवाला बाग तीन तरफ से दीवारों से घिरा हुआ है। इसके चौथी तरफ एक सँकरा प्रवेश द्वार है। सौ साल से भी ज्यादा पुरानी बात है। 13 अप्रैल 1919 के उस दिन पंजाबी लोग बैसाखी का त्योहार मना रहे थे। पंजाब में यह त्योहार खालसा पन्थ की स्थापना के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है। उस दिन हज़ारों लोग जलियाँवाला बाग में इकट्ठा हुए थे। बच्चे खेल रहे थे और बुजुर्ग रॉलेट एक्ट और स्वतंत्रता सेनानियों सैफुद्दीन किंचलू और डॉ. सत्य पाल की गिरफ्तारी के खिलाफ भाषण दे रहे वक्ताओं को एक के बाद एक ध्यानपूर्वक सुन रहे थे।

यह प्रथम विश्व युद्ध के बाद का समय था। उस युद्ध में 3,20,000 पंजाबी सैनिकों ने यूरोप और मध्य पूर्व में ब्रिटिश सेना की ओर से युद्ध लड़ा था। युद्ध से लौटे इन सैनिकों, जिनमें कई घायल भी थे, को देने के लिए ब्रिटिश सरकार के पास ना तो ठीक से मुआवजा था और न ही रोज़गार। इस व्यापक असन्तोष और विरोध के कारण रेल, टेलीग्राफ और संचार प्रणाली बाधित होने लगी थी। पंजाब के ब्रिटिश लेफ्टिनेंट गवर्नर माइकल ओंडवायर का मानना था कि ये मई के आसपास घटित 1857 के विद्रोह की तर्ज पर होने वाले एक संगठित विद्रोह की साजिश के शुरुआती और स्पष्ट संकेत थे।

जलियाँवाला बाग

अमनदीप संधू
चित्र: प्रोइति रॉय
अनुवाद: शबनम सेनगुप्ता



जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड (स्वर्ण मन्दिर, अमृतसर के पुस्तकालय की एक पेंटिंग में)

इस बढ़ती अशान्ति के चलते, मार्च 1919 में ब्रिटिश सरकार ने रॉलेट एक्ट लागू किया। इस अधिनियम का पूरा नाम था: 'अराजक और क्रान्तिकारी अपराध अधिनियम, 1919'। यह कानून पुलिस को किसी भी व्यक्ति को बिना किसी कारण गिरफ्तार करने का अधिकार देता था। ब्रिटिश सरकार ने इस कानून को लागू किया ताकि वे बिना मुकदमे और न्यायिक समीक्षा के अनिश्चितकाल तक उन कैदियों को जेल में रख सकें, जिन्हें वे उपनिवेशवाद के खिलाफ गतिविधियों में संलिप्त मानते थे। इसी दमनकारी कानून के तहत कांग्रेस के प्रमुख नेता सैफुद्दीन किचलू और डॉ. सत्य पाल को गिरफ्तार कर धर्मशाला भेज दिया गया था। जलियाँवाला बाग में एकत्रित लोग इन्हीं गिरफ्तारियों का विरोध कर रहे थे।

इस विरोध से पहले, 10 अप्रैल 1919 को अमृतसर के डिप्टी कमिश्नर माइल्स इरविंग के आवास पर एक प्रदर्शन हुआ था। वहाँ तैनात एक सैन्य टुकड़ी ने भीड़ पर गोलियाँ चला दीं। इससे कई प्रदर्शनकारी मारे गए। इसके बाद हिंसात्मक घटनाओं का सिलसिला शुरू हो गया। उग्र भीड़ ने ब्रिटिश बैंकों में आगजनी की। कई ब्रिटिश नागरिकों की हत्या कर दी और दो ब्रिटिश महिलाओं पर हमला किया।

एक बुजुर्ग अँग्रेज़ मिशनरी मार्सेला शेरवुड, अपनी देखरेख में रहने वाले लगभग 600 भारतीय बच्चों की सुरक्षा को लेकर चिन्तित थीं। 11 अप्रैल को वह स्कूल बन्द करने

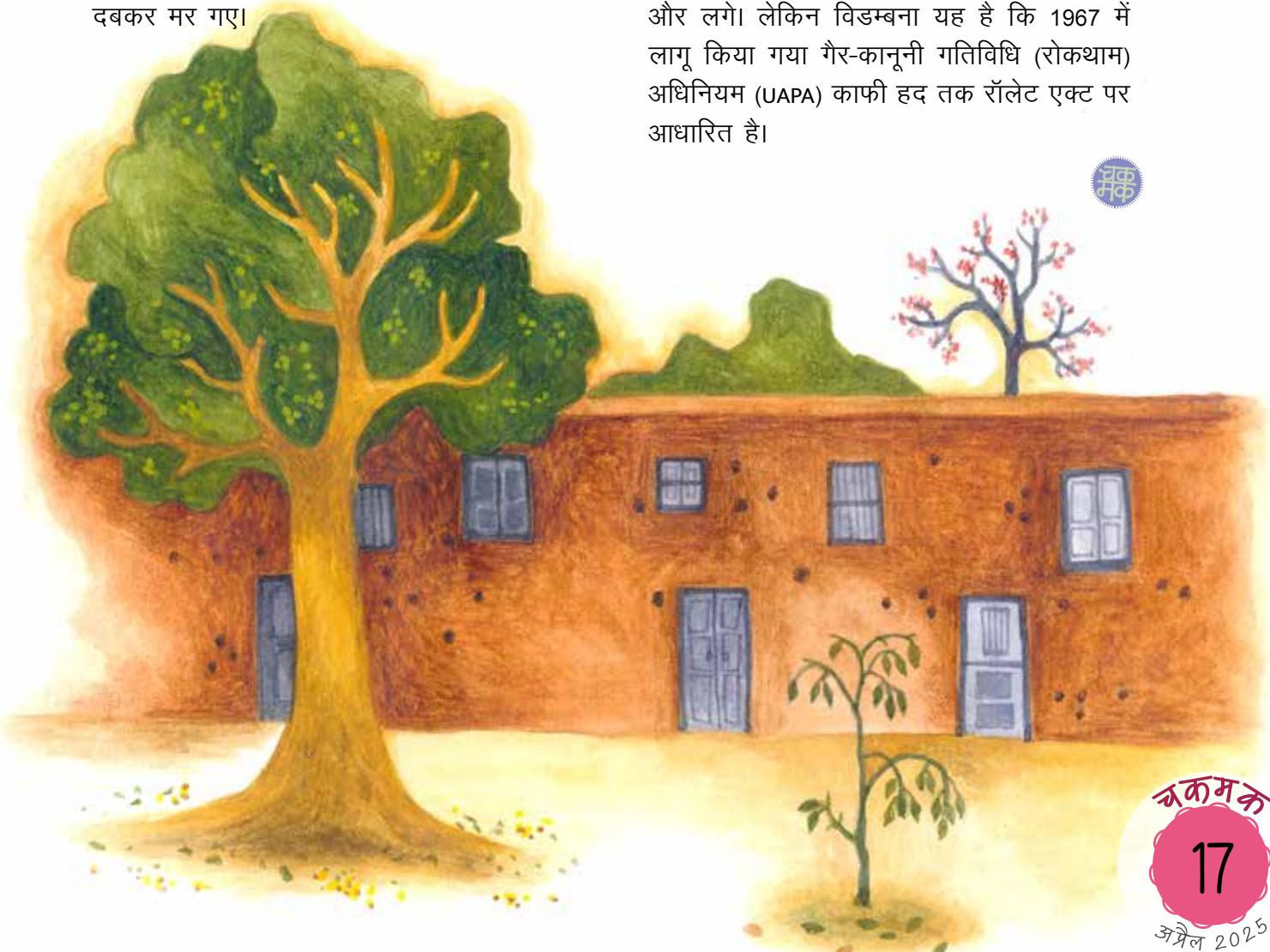
और बच्चों को सुरक्षित घर भेजने के लिए निकल रही थीं। रास्ते में एक सँकरी गली से गुज़रते समय उन्हें उग्र भीड़ ने घेर लिया। कुछ स्थानीय लोगों ने, जिनमें उनके एक छात्र के पिता भी शामिल थे, उन्हें भीड़ से छुपाकर गोबिन्दगढ़ किले में सुरक्षित पहुँचा दिया। अगले दो दिनों तक अमृतसर शहर शान्त रहा। लेकिन पंजाब के अन्य हिस्सों में हिंसा जारी रही। 13 अप्रैल तक, ब्रिटिश सरकार ने पंजाब के अधिकांश क्षेत्रों में मार्शल लॉ लागू कर दिया था। इस कानून के तहत लोगों की सभा करने की स्वतंत्रता पर रोक लगा दी गई थी और चार से अधिक लोगों के इकट्ठा होने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था।

अमृतसर में आम हड़ताल के नेताओं ने 12 अप्रैल को हिन्दू कॉलेज में एक बैठक की। इस बैठक में किंचलू के सहयोगी हंस राज ने घोषणा की कि अगले दिन शाम 4:30 बजे जलियाँवाला बाग में एक सार्वजनिक विरोध सभा आयोजित की जाएगी। इस सभा का आयोजन मुहम्मद बशीर द्वारा किया जाना था और अध्यक्षता वरिष्ठ एवं सम्मानित कांग्रेस नेता लाल कन्हैयालाल भाटिया करने वाले थे। इसी सभा के दौरान जब कार्यक्रम समाप्त होने वाला था, अचानक बड़ी संख्या में पुलिसकर्मी जलियाँवाला बाग के उस सँकरे प्रवेश द्वार से अन्दर आ गए। ये सभी पुलिसकर्मी भारतीय थे, लेकिन वे ब्रिटिश सरकार के अधीन कार्यरत थे।

अस्थायी ब्रिगेडियर कर्नल रेजिनाल्ड एडवर्ड हैरी डायर के आदेश पर बिना किसी चेतावनी के पुलिस ने भीड़ पर गोलियाँ चलानी शुरू कर दीं। आम तौर

पर जब पुलिस गोली चलाती है, तो पहले भीड़ को तितर-बितर होने का आदेश दिया जाता है, चेतावनियाँ दी जाती हैं, और फिर भीड़ पर काबू न पाने की स्थिति में पैरों पर गोली चलाई जाती है। लेकिन यहाँ ऐसे किसी नियम की परवाह नहीं की गई। गोलियाँ सीधे लोगों के सीने और सिर पर मारी गईं। पुलिस तब तक गोलियाँ चलाती रही जब तक कि उनके पास गोला-बारूद खत्म नहीं हो गया।

मृतकों की संख्या को लेकर अलग-अलग अनुमान हैं। कुछ रिपोर्टों के अनुसार 379, तो कुछ के अनुसार 1500 या उससे अधिक लोग मारे गए। इसके अलावा 1200 से अधिक लोग घायल हुए। जान बचाकर भागने की कोशिश में कई लोग बाग में स्थित एक खुले कुएँ में कूद गए। लेकिन वे वहाँ भी सुरक्षित नहीं रह पाए। गोलियों से बचने की कोशिश में लोग एक के ऊपर एक गिरते गए और दबकर मर गए।



यह भारतीय उपमहाद्वीप में नागरिकों पर पुलिस द्वारा किया गया सबसे भयावह हमला था। इस बर्बरता और जवाबदेही की कमी ने सभी को झकझोर कर रख दिया। इससे जनता का यूनाइटेड किंगडम की मंशा पर से भरोसा उठने लगा। महान कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इस जनसंहार के विरोध में ब्रिटिश सम्राट जॉर्ज पंचम द्वारा दी गई नाइटहुड की उपाधि और पदक लौटा दिए। जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड के बाद ही महात्मा गांधी ने असहयोग आन्दोलन की शुरुआत की। साथ ही सिखों ने गुरुद्वारा आन्दोलन शुरू किया। इसका उद्देश्य ब्रिटिश समर्थित महन्तों से अपने गुरुद्वारों को मुक्त कराना था। जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड भारतीय उपमहाद्वीप में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष का एक महत्वपूर्ण मोड़ बन गया।

भारत को स्वतंत्रता मिलने में लगभग बीस साल और लगे। लेकिन विडम्बना यह है कि 1967 में लागू किया गया गैर-कानूनी गतिविधि (रोकथाम) अधिनियम (UAPA) काफी हद तक रॉलेट एक्ट पर आधारित है।



निधि गुलाटी

निर्देशक: हायाओ मियाजाकी

रिलीज़: सन 1988

निर्माता: पिक्सर एनिमेशन स्टूडियोज और
वॉल्ट डिज़्नी पिकचर्स

यूट्यूब पर उपलब्ध

मई 1905 में जापान के त्सुशिमा स्ट्रेट में एक ऐतिहासिक घटना घटी। जापान और रूस के बीच फरवरी 1904 से युद्ध चल रहा था। मसला यह था कि कोरिया और मंचूरिया के हिस्सों पर किसका कब्ज़ा रहेगा। 1905 में जापान की सेना ने रूस को हरा दिया। मध्य युग के बाद पहली बार, एक गैर-यूरोपीय देश ने किसी यूरोपीय ताकत को एक बड़े युद्ध में हराया था। इस जीत की खुशी हमारे यहाँ, यानी औपनिवेशिक भारत में भी पहुँची। उस समय (1905 से 1945 तक) जापान काफी आक्रामक रहा। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान जापान ने पहले नए इलाके जीते। फिर कोरिया पर कब्ज़ा किया। उसके बाद मंचूरिया और चीन पर हमला किया। और फिर 1941 में एक दिन जापान ने अचानक पर्ल हार्बर पर हमला बोल दिया। इससे दूसरे विश्व युद्ध की शुरुआत हुई। यानी उस समय लड़ाई की शुरुआत करता था यह देश।

माय नेबर तोतोरो



जापान का बदलता स्वरूप

फिर 1945 में एक ज़बरदस्त मोड़ आया। हिरोशिमा व नागासाकी में बम गिरने से जापान को काफी नुकसान हुआ। जापान अगले कुछ सालों तक अमरीका और उसकी सन्धि देशों के कब्जे में था। तुम जानते हो सन्धि देश कौन-से थे? 1947 में एक नया संविधान रचा गया — अमरीका के कहने से और उसकी मदद से। इस संविधान के अनुच्छेद 9 में जापान ने अपनी नई पहचान निर्मित करने की बात की। शान्तिवाद की बात की। जापान ने तय किया वो अब किसी भी देश या समुदाय पर आक्रमण नहीं करेगा। जहाँ भी हालात खराब होंगे, वह अन्य देशों को भरपूर सहायता देगा। सभी के विकास के लिए काम करेगा। इसके बदले अमेरिका ने वादा किया कि वह अब जापान की रक्षा करेगा। लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी नाम की एक नई राजनीतिक पार्टी बनी। इसने कोशिश की कि विश्व युद्ध से पहले की परम्पराएँ और उसके बाद के आधुनिकीकरण को एक साथ लाया जाए। इसके बारे में थोड़ा और पता करने की कोशिश करना।

1950 से 1970 के दशकों में जापान शान्तिप्रिय, लोकतांत्रिक देश बना। उसने तय किया कि वह अपना सारा ध्यान विकास पर लगाएगा। आक्रमण और युद्ध से दूर रहेगा। शान्ति का दूत बनेगा, पूरी दुनिया में। यहाँ अहम बात यह है कि जापान ने अपनी मूल पहचान बदली, अपना स्वभाव बदला। यह जानकर तुम्हें शायद हैरानी हो रही होगी। पर हमारी तरह देशों के भी स्वभाव होते हैं, जो उनकी नीतियों में दिखते हैं। खास तौर पर, इन बातों में कि वह विकास को कैसे समझते हैं, हाशिए पर स्थित लोगों से कैसा बर्ताव करते हैं, अपने से छोटे और कमज़ोर देशों से कैसे रिश्ते बनाते हैं, किसी आपदा में कैसे काम करते हैं, अपने देश के लोगों की सेहत और शिक्षा पर कितना ध्यान देते हैं। इसमें और भी कई बातें शामिल हैं, जैसे लोकतंत्र में सुधार, औद्योगिक और तकनीकी विकास।

जापानी संस्कृति और शान्ति की धारणा

जापान की संस्कृति को गौर-से देखो तो इस पहचान को तुम हर जगह पाओगे, खासकर पॉप कल्चर में। बतौर मिसाल लोकप्रिय एनिमे (जापानी फिल्म) मोबाइल सूट गंडम, अटैक ऑन टाइटन को ही ले लो। हालाँकि ऐसा लगता है कि ये सेना के

बारे में हैं, लेकिन गहराई से सोचो तो ये युद्ध की आलोचना के बारे में हैं। इनका सार है कि टकराव और झगड़ा बेकार है और इनसे किसी का फायदा नहीं होता। ब्रेयरफुट जेन नाम की एक माँगा (जापानी कॉमिक्स) हिरोशिमा पर हुए परमाणु हमले में बच जाने वाले एक छोटे लड़के, जेन की कहानी है। इसका पावरफुल मैसेज है कि दुनिया में परमाणु बम नहीं होने चाहिए। क्या तुमने पढ़ी है ये?

जापान की ऐसी कई सांस्कृतिक प्रथाएँ हैं जो इस शान्तिप्रियता का उत्सव मनाती हैं। इनमें से एक है, तोरो नागाशी यानी तैरते हुए लैम्प। लोग लालटेनों पर मृतकों के नाम और सन्देश लिखते हैं व उनके लिए प्रार्थना करते हैं। ये लालटेन नदी या झील में धीरे-धीरे तैरते हुए बहते हैं। काफी सुन्दर होता है ये दृश्य। ऐसी ही एक और कहानी है सदाको की। जब हिरोशिमा में 1945 में परमाणु बम गिरा, तब सदाको नाम की 2 साल की यह बच्ची बच तो गई। लेकिन उसे खून का कैंसर हो गया। अस्पताल में उसे जापान की एक कथा पता चली। इस कथा के अनुसार, अगर कोई व्यक्ति ओरिगेमि के 1000 क्रेन बनाए, तो उसकी जो भी इच्छा हो, वो पूरी होती है। फिर क्या था, सदाको





लग गई 1000 क्रेन बनाने में। हालाँकि सदाको अपने जीवन में 1400 क्रेन ही बना पाई। पर इसी को कायम रखते हुए, अब दुनिया भर के लोग शान्ति के लिए और हिरोशिमा के परमाणु बम से पीड़ित लोगों की याद में हिरोशिमा में कागज के क्रेन भेजते हैं।

स्टूडियो धिबली की फिल्मों में भी जापान की शान्ति दूत की यह छवि साफ झलकती है। इनकी सभी फिल्में कमाल की हैं। कुछ फिल्में जैसे कि ग्रेव ऑफ दि फायरफ्लाइस और नौसिका ऑफ द वैली ऑफ द विंड खास हैं। इनमें युद्ध की खामियों व लड़ाई और मारपीट के नुकसान को सामने लाया गया है।

एक जादुई, निडर दुनिया की कहानी

यह एक ऐसी दुनिया की कहानी है, जहाँ हम सब बसना चाहेंगे। फिल्म में कोई लड़ाई नहीं है। कोई विलेन नहीं है, ना कोई डरावने राक्षस हैं और ना ही कोई बिगड़े वैज्ञानिक। किसी की दुश्मनी नहीं है किसी से। कोई बुरी भावनाएँ नहीं हैं। फिल्म में दो बहनें हैं जो लड़ती नहीं हैं। तुम्हें शायद मार्च 2023 के चकमक के अंक में छपा अमन मदान का लेख याद हो। उसमें आराम से बात करने के बारे में बताया गया था। इस फिल्म में भी सब प्यार से बात करते हैं।

फिल्म की शुरुआत में कुसाकाबे परिवार शहर से दूर एक जंगल के पास एक घर में रहने जाता है। घर बदलने का कारण ये है कि माँ की तबियत

खराब है और वे पास के अस्पताल में दाखिल हैं। शायद ज्यादा समय तक ज़िन्दा ना रहें। पर इस बात को बस मान लिया जाता है। कोई रोना-धोना नहीं होता। इस बारे में फिल्म में बात भी नहीं होती। ये फिल्म का अनकहा सच है। जैसे कि हमने पहले बात की, दूसरे विश्व युद्ध के बादल अभी छँटे नहीं हैं। लेकिन लोग अपनी ज़िन्दगी जीने लगे हैं। परिवार में तात्सुओ और उनकी दो बेटियाँ मेर्ई और सत्सुकी हैं। वे खुश रहने की कोशिश कर रहे हैं। मेर्ई उदास होती है तो सत्सुकी उसका मन बहलाती है। छोटी उम्र में माँ को खो देने का डर, अकेलेपन का डर कहीं सामने नहीं आता, पर है तो – इस सबसे कैसे जूझें? फिल्म इसे बहुत खूबसूरती से संजोती है।

पड़ोस के एक बच्चे से बात करते हुए यह आभास होता है कि उनका घर प्रेतों का अड़डा है। लेकिन मेर्ई और सत्सुकी बिना उर के, बेखौफ घर में भागने-खेलने लगती हैं। घर में घुसते ही उन्हें छोटे-छोटे, काले गुदगुदे गोले भागते दिखते हैं। वह शायद धूल के गोले होंगे। वे रुई और मकड़ी के बीच के कुछ तो हैं। लेकिन उनकी देखभाल करने वाली आया कहती है कि वे कालिख के वेताल हैं और सूने घरों में रहते हैं। अब अगर लड़कियाँ खूब हँसेंगी तो वे घर से भाग जाएँगे। ऐसा होता भी है।

तोतोरो से मुलाकात

कुछ दिनों बाद, मेर्ई को भूरा खरगोश जैसा छोटा-सा कुछ दिखता है। उसका हुलिया बयां करना मुश्किल है। यू समझ लो कि एक चलता-फिरता तकिया है, नुकीले कान और बड़ी आँखें। उसे देखते ही तुम्हारा मन गुदगुदाने लगे। यह है, बेबी तोतोरो। बेबी तोतोरो का पीछा करते-करते मेर्ई जंगल में एक हरी-भरी सुरंग में जा पहुँचती है। फिसलते-फिसलते वह एक बड़े गुदगुदे पेट पर जा गिरती है। ये जनाब हैं बड़े तोतोरो! दोनों एक-दूसरे की आँखों में देखते हैं। और देखते ही उनकी दोस्ती हो जाती है। वह तोतोरो पर कूदती है।

उसकी नाक में गुदगुदी करती है, उसे खुजलाती है। जवाब में तोतोरो एक जम्हाई लेता है और दोनों सो जाते हैं। एक घोंघा पेड़ की टहनी पर चढ़ता है, एक पानी की बूँद तालाब में गिरती है, तोतोरो के पेट पर मेर्झ सो रही है – कमाल का दृश्य बनाया है मियाजाकी ने। प्रकृति, इन्सान और कल्पना तीनों में इतना तारतम्य!! यहाँ जंगल अँधेरा और डरावना नहीं है, बल्कि जादुई है।

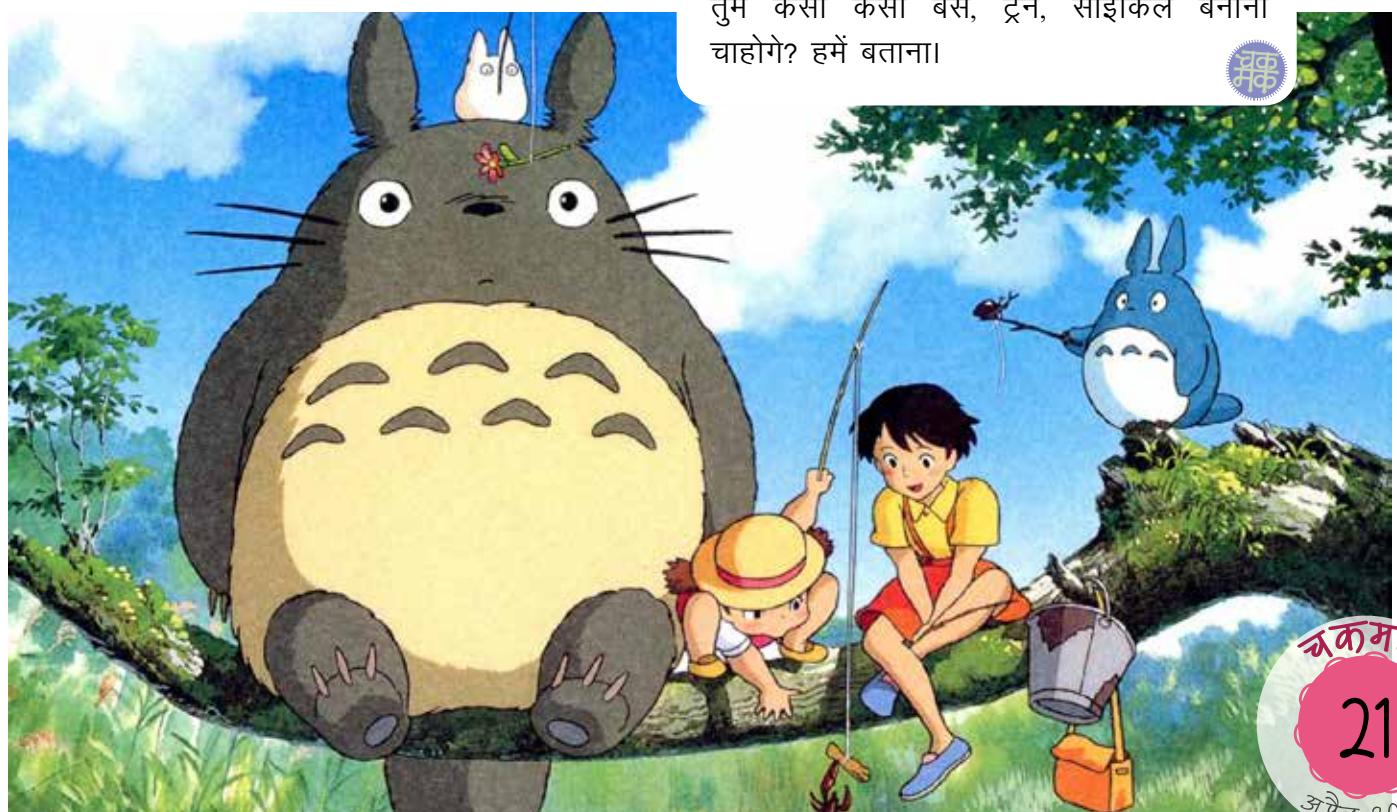
वैसे जापान के पुराने मिथकों में कहीं तोतोरो का ज़िक्र है नहीं। ये फ़िल्म बनाने वाले मियाजाकी की कल्पना है। राजा तोतोरो, कुछ बिल्ली जैसे, थोड़े खरगोश जैसे, थोड़े-से कुत्ते जैसे, थोड़े-से भालू और कुछ-कुछ उल्लू से भी मिलते-जुलते। रुई सरीखे। खूब ठण्ड में गर्म-गर्म मैगी के कटोरे जैसे।

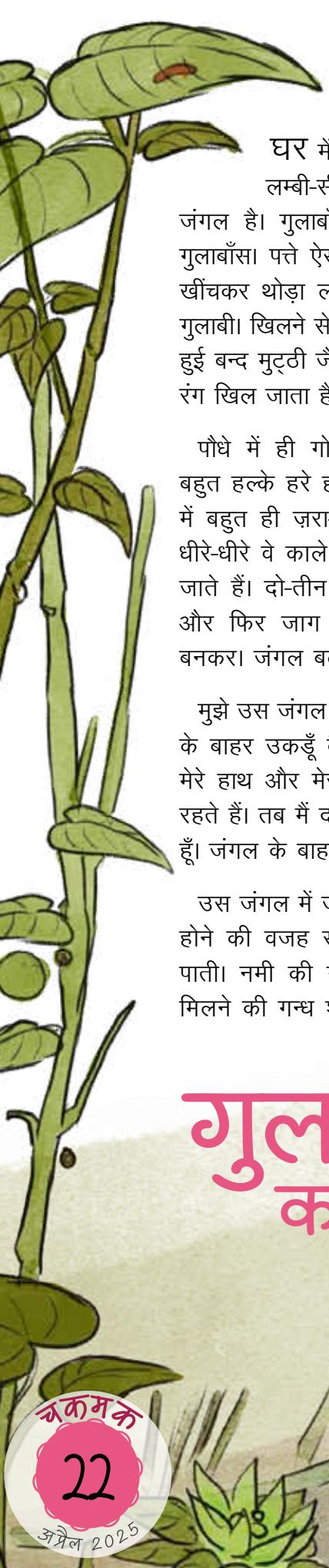
उधर सत्सुकी और पापा मेर्झ को ढूँढने जंगल जाते हैं। वो आराम से ज़मीन पर सो रही होती हैं और तोतोरो गायब हो चुका होता है।

अब सीन बदलता है। दोनों बहनें बस स्टॉप पर अपने पापा का इन्तज़ार कर रही हैं और शाम ढल जाती है। एकदम अँधेरा छा जाता है। वैसे मेरे साथ ऐसा जब भी हुआ है, मैं थोड़ा डर जाती हूँ। तुम्हारे

साथ ऐसा कुछ हुआ है क्या? पर फ़िल्म में, तोतोरो चुपके से आकर दोनों लड़कियों के साथ खड़ा हो जाता है। उनके दोस्त की तरह। तभी टप-टप बारिश की बूँदें गिरने लगती हैं। सत्सुकी तोतोरो को एक छाता देती है, जिसे पकड़कर वह खड़ा रहता है। पेड़ों से गिरती पानी की बूँदें उसे सहला देती हैं। खुशी से वह बहुत ऊँची कूद लगाता है, जिससे बूँदों की बौछार झमाझम गिरती है। सत्सुकी और मेर्झ हैरान हो जाती हैं, तभी बस की हैडलाइट दिखती है।

अब जो सामने आता है वह शायद फ़िल्म इतिहास का सबसे खूबसूरत अचम्भा है। तुम उसकी रक्ती भर भी कल्पना नहीं कर सकते। धूल का गुमसुम, गोल-गोल प्रेत नहीं, बड़ा-सा सौम्य तोतोरो भी नहीं। इन सबसे एकदम अलग एक बस आती है जो कि एक बिल्ली है। उसकी आँखें बस की हैडलाइट हैं और उसके बारह पंजे टायर हैं। इनके ज़रिए बस ज़बरदस्त ढंग से दौड़ती है। बिल्ली अन्दर से खोखली है और इसमें आप बैठ सकते हैं। कल्पना की दुनिया का सबसे बड़ा कमाल है यह। अद्भुत। जैसे किसी झींगुर का सवारी डिब्बा, अज़गर की ट्रेन, कछुवे की नाव! तुम कैसी कैसी बसें, ट्रेन, साइकिल बनाना चाहोगे? हमें बताना।





घर में एक आँगन है। आँगन में एक लम्बी-सी क्यारी है। क्यारी में एक जंगल है। गुलाबाँस का। गहरे हरे पत्तों वाला गुलाबाँस। पत्ते ऐसे, जैसे पान के पत्ते को ज़रा खींचकर थोड़ा लम्बा कर दिया हो। फूल गहरे गुलाबी। खिलने से पहले कलियाँ कलाई पर उठी हुई बन्द मुट्ठी जैसी लगती हैं। मुट्ठी खुलते ही रंग खिल जाता है।

पौधे में ही गोल-गोल बीज आते हैं। पहले बहुत हल्के हरे होते हैं। जैसे बहुत सारे सफेद में बहुत ही ज़रा-सा हरा रंग मिला दिया हो। धीरे-धीरे वे काले हो जाते हैं और झारकर गिर जाते हैं। दो-तीन दिन पड़े रहते हैं सोते हुए। और फिर जाग जाते हैं। ढेर सारे गुलाबाँस बनकर। जंगल बढ़ता जाता है।

मुझे उस जंगल में भटकना पसन्द है। मैं क्यारी के बाहर उकड़ूँ बैठी रहती हूँ और मेरी आँखें, मेरे हाथ और मेरा मन उस जंगल में भटकते रहते हैं। तब मैं दो दुनियाओं में एक साथ होती हूँ। जंगल के बाहर और जंगल के भीतर।

उस जंगल में जंगल की खुशबू आती है। घना होने की वजह से धूप उसके अन्दर नहीं जा पाती। नमी की गन्ध में पत्तियों के मिट्टी में मिलने की गन्ध शामिल रहती है। वहाँ भटकते

हुए मुझे कुछ केंचुए मिलते हैं। मैं झाड़ू की सींक पर उन्हें आहिस्ता-से उठाकर देखती हूँ। फिर आहिस्ता-से ही वापस जंगल में छोड़ देती हूँ। बहुत सारी नन्ही-नन्ही चींटियाँ मिलती हैं। कतार बाँधे जाती हुई। मोटे-मोटे चींटे भी। बेतरतीब भागते हुए। वीरबहूटी भी मिल जाती है कभी-कभी। किसी पत्ती पर आराम फरमाती। कुछ ऐसे भी मिलते हैं, जिन्हें मैं नहीं पहचानती। सब अपने काम में लगे रहते हैं। अक्सर छुटके-छुटके शंख भी मिलते हैं मुझे वहाँ खुदाई करने पर।

जंगल के एक किनारे मैंने एक समुद्र खोदा है। और उस समुद्र से कई-कई नदियाँ निकाली हैं। एक उँगली गड़ाती हूँ हल की तरह मिट्टी में। फिर उस उँगली के इशारे पर नदी बनती चली जाती है। हर नदी किसी पौधे के कदमों में खतम होती है। नदियों के रास्ते में कभी पहाड़ भी आ जाते हैं। उन्हें मैं चुटकियों में उखाड़ डालती हूँ। कई नदियाँ बीच में मिल भी जाती हैं। पर चूँकि मैंने हरेक की मंजिल अलग-अलग तय की है, सो आगे उनके रस्ते जुदा हो जाते हैं। कुछ एक-दूसरी को काटती हुई अपनी-अपनी दिशा में चली जाती हैं।

रोज़ सुबह मैं अपने समुद्र में पानी भरती हूँ और वह नदियों के जाल में आगे बढ़ता-बहता वहाँ पहुँचता है, जहाँ मैं उसे पहुँचाना चाहती हूँ।

गुलाबाँस का जंगल

संज्ञा उपाध्याय

चित्र: अनन्या सिंह

शाम चार बजे के आसपास मेरे जंगल में ढेरों-ढेर गुलाबाँस खिलने शुरू होते हैं और रात आते-आते उनकी खुशबू हमारे आँगन में पूरी तरह बिखर जाती है। मेरा जंगल जैसे आँगन में फैल जाता है...

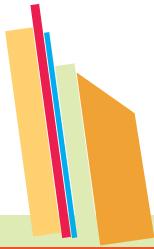
दिन भर गर्मी से तपे आँगन में पानी का छिड़काव कर दादी की चारपाई बिछाई जाती है। गर्मियों में उन्हें कमरे के बजाय आँगन में सोना ज्यादा पसन्द है। मुझे चारपाई पर दादी से सटकर लेटना बहुत अच्छा लगता है। हम दोनों देर तक ढेर सारी बातें करते रहते हैं। मैं सोने से पहले अपने जंगल को चारपाई से देखती हूँ। मुझे वहाँ गहरा हरा अँधेरा दिखता है। उस अँधेरे पर फूल सितारों की तरह चमक रहे होते हैं। हवा में हिलते सितारे। उस तरफ से हवा मुझ तक आती है। खुशबू में फूलों की फुसफुसाहट लेकर — “हम जाग रहे हैं, तुम सो जाओ...”

सुबह जागती हूँ, तो रात भर के जगे फूल अपनी खुशबू समेटकर कहते हैं, “अब हम सोने जा रहे हैं...”

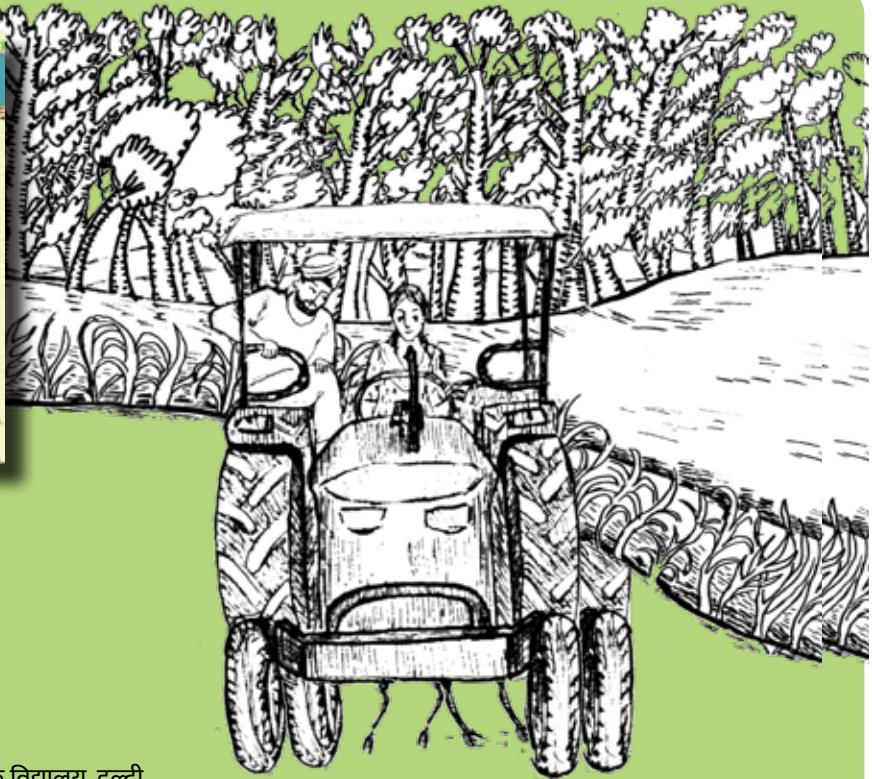
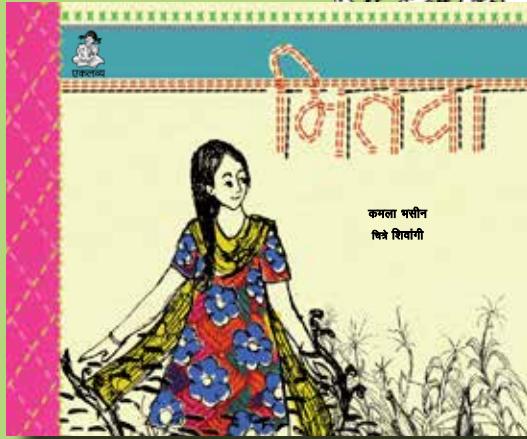
और जैसे बेहद गहरी नीद में बिस्तर से गिर पड़े हों, पंखुड़ियाँ मूँदे सोए वे मिट्टी पर गिर पड़ते हैं। कलाई पर उठी बन्द मुटिठयों जैसी कलियाँ उन्हें विदा देती हैं, कहती हैं, “आज हम रात भर जाएँगे...”

और जंगल का दिन फिर शुरू हो जाता है।





किताबें कुछ कहती हैं...



मितवा

लेखक: कमला भसीन

चित्रकार: शिवांगी सिंह

प्रकाशक: एकलव्य फाउंडेशन

भाषा: हिन्दी

समीक्षा: निजारिश फातिमा, पाँचवीं, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, हल्दी

पचपेड़ा, खटीमा, ऊधम सिंहनगर, उत्तराखण्ड

मैंने एक किताब पढ़ी। उस किताब में एक लड़की है। उसका नाम मितवा है। वह पंजाब के सिख परिवार की बेटी है और किसान की भी। वह खेतीबाड़ी करना अच्छे से जानती है। मितवा को पढ़ने का मौका तो मिला मगर खुलकर जीने का नहीं। जैसे उसे साइकिल, ट्रैक्टर चलाने की आज्ञादी नहीं है। पर उसने अपने पिता का दिल जीतकर आज्ञादी पा ही ली। जब मितवा के पिताजी को दिल का दौरा पड़ा था तब उसके दोनों वीरजी किसी काम से शहर गए थे। तब मितवा ने खुद ट्रैक्टर चलाकर अपने पिता को अस्पताल पहुँचाया था।

इस बारे में मेरा यह कहना है कि लड़का हो या लड़की आज्ञादी सबको खुलकर मिलनी चाहिए। लड़कियाँ कभी कमज़ोर नहीं होतीं। बहुत-से लोग कहते हैं कि लड़कियों का दिमाग घुटने में होता है। पर यह झूठ है। आज बहुत-सी लड़कियाँ अपने पेरों पर खड़ी हैं, उनका दिमाग क्या घुटने में है? मितवा ने साइकिल व ट्रैक्टर नहीं सीखा होता तो मितवा के पिता नहीं बच पाते।

आज के ज़माने में भी लोग कहते हैं कि अगर हम लड़कियों को बाहर भेजेंगे तो लड़कियाँ बिगड़ जाएँगी। किसी ने उनसे ये पूछा क्यों नहीं कि क्यों बिगड़ जाएँगी। खैर पूछ भी लेते तो क्या फायदा। जिन लोगों को भी ऐसा लगता है उन्हें मितवा किताब ज़रूर पढ़नी चाहिए।



कहानियों का शहर

लेखक: रुक्मिणी बैनर्जी

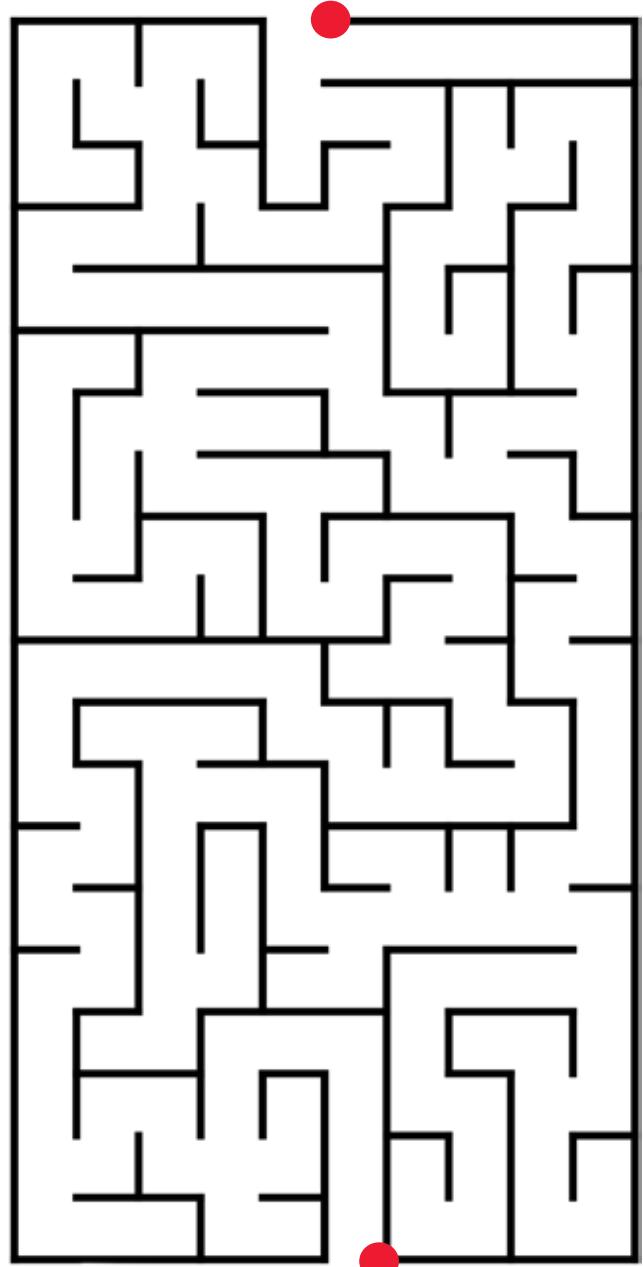
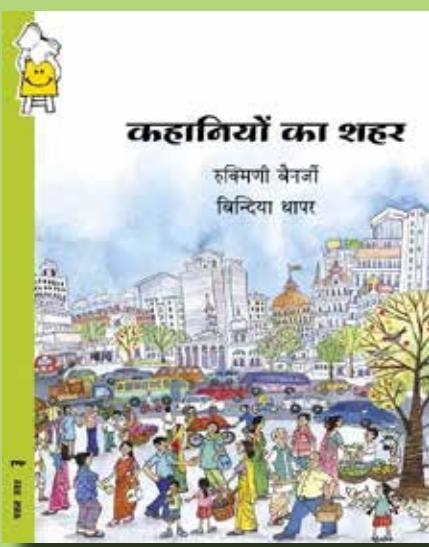
चित्र: विनिद्या थापर

प्रकाशक: प्रथम बुक्स

समीक्षा: जसोदा, सातवीं, अंजीम प्रेमजी स्कूल, बाड़मेर, राजस्थान

मैंने यह पुस्तक पढ़ी। बड़ी मज़ेदार थी। इसमें एक लड़की है। उसका नाम मिमि है। मिमि को कहानियाँ सुनना पसन्द था। मुझे बुरा लगा कि उसको कहानियाँ सुनाने वाला कोई नहीं था। फिर मिमि के स्कूल में एक दीदी आई। फिर तो मिमि की मौज हो गई। मिमि को कहानी सुनाने वाला जो मिल गया। काश मुझे भी कोई कहानियाँ सुनाने वाला मिल जाता। मैं किताबें तो पढ़ लेती हूँ। पर कहानी सुनने में ज्यादा मज़ा आता है। कोई हाव-भाव से सुनाए तो अच्छा लगता है। मिमि की दीदी मिलीं कहानी सुनाने के लिए। हमारे पड़ोस में एक रमेश जी रहते थे। वे हमें उल्लू की

एक कहानी सुनाते थे, वो भी हाव-भाव के साथ। सुनने में बड़ा मज़ा आता था। पर अब कोई सुनाने वाला है ही नहीं।





क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था:

अक्सर बच्चों पर हाथ उठाना लोगों के लिए आसान होता है। क्यों?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं।
इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो।

अगले अंक का सवाल है:

हँसी क्यों छृटती है?

तुम्हारा मन करे तो तुम भी अपने जवाब हमें
भेजना। जवाब तुम लिखकर या चित्र/कॉमिक
बनाकर दे सकते हो।

अपने जवाब तुम हमें
merapanna.chakmak@eklavya.in पर
ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर
हँटॉसरेप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी
भेज सकते हो। हमारा पता है:

બન્ધક

एकलव्य फाउंडेशन,
जमनालाल बजाज परिसर,
जाटखेड़ी, फॉर्डून कस्तूरी के पास,
भोपाल - 462026. मध्य प्रदेश

बबलू कुमार, आठवीं, अपना स्कूल, चिरैया सेंटर, बिहार

क्योंकि बच्चों को जल्दी गुस्सा नहीं आता। और वे इस मार के आदी हो चुके हैं। इसलिए बड़े लोग आसानी से बच्चों पर हाथ साफ करते हैं। बच्चे मासूम होते हैं और जल्दी ही इस बात को भूल जाते हैं।

आजाद, चौथी, अजीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

क्योंकि बच्चे छोटे होते हैं और छोटों से बड़े लोग कोई डरते नहीं हैं। और सोचते हैं कि बच्चे हम बड़ों को मार नहीं सकते।

देविका चक्रधारी, दसरी, शासकीय प्राथमिक शाला देवरी, भाटापारा, छत्तीसगढ़

क्योंकि बच्चे छोटे और मासूम होते हैं। बड़ों के गुस्से से बच्चे डर जाते हैं। बच्चे बात नहीं कर सकते हैं।

कविता कमारी, पाँचवीं, अपना स्कूल, गम्भीपुरा सेंटर, बिहार

क्योंकि स्कूल हो या घर, बच्चों से अक्सर कुछ ना कुछ नादानी हो ही जाती है। पर नादानी पर बड़े लोगों को बच्चों को समझाने की बजाय मारकर सज्जा देना आसान लगता है। बच्चों को गलती पर समझाने के लिए समय देना पड़ता है। इसलिए उन्हें आसान तरीका यही लगता है कि बच्चों को मार-पीटकर या डर दिखाकर मामला शान्त कर दो। एक बार मैंने अपने पापा का कहना नहीं माना तो मेरे पापा ने मुझ पर हाथ उठाकर गुरस्सा शान्त किया। साथ ही मेरी मम्मी, बहन और भाइयों ने मुझे समझाने की बजाय अपना हाथ साफ करने का फायदा उठाया। मुझे बहुत बुरा लगा।

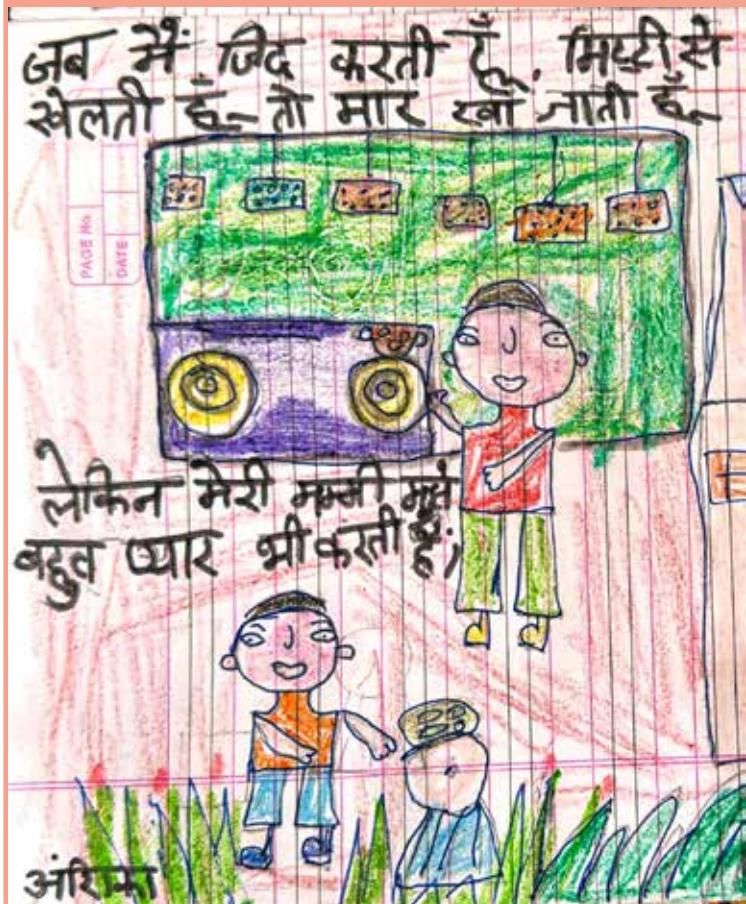
अमृता केरकट्टा, छठवीं, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय,
सीतापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ़

क्योंकि बच्चे छोटे और नासमझ होते हैं। वे नहीं जानते हैं कि सही क्या है और गलत क्या। बच्चों की गलती ना हो तो भी बड़े बच्चों पर हाथ उठा देते हैं। अगर आप बड़े हो तो इसमें मेरी क्या गलती है। बच्चे बड़ों पर हाथ नहीं उठाते और वे मम्मी-पापा से नहीं लड़ते हैं। बच्चे किसी बड़े पर हाथ उठा दें या मम्मी-पापा की बात नहीं सुनें तो भी मम्मी हाथ उठा देती हैं। मम्मी-पापा काम करके आते हैं और थके होते हैं और हम बच्चे उन्हें परेशान करते हैं तो भी मम्मी बच्चे पर हाथ उठा देती हैं। बच्चों को इतनी बुद्धि नहीं होती। इसलिए उन पर हाथ उठाना आसाना होता है। मम्मी टेंशन में रहती हैं। उनको दो अर्जे काम रहता है। वो बच्चे से मोबाइल माँगती हैं तो बच्चे नहीं देते हैं। तब भी मम्मी बच्चों पर हाथ उठा देती हैं। और मम्मी कहीं जाती है और बच्चे साथ चलने की ज़िद करते हैं, तब भी।

सुहानी रावत, चौथी, अ.जी.म प्रेमजी स्कूल, मातली,
उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हम बच्चों के गाल बहुत मुलायम होते हैं। बड़े लोग सोचते हैं कि हमारे हाथ की खुजली भी मिट जाएगी और बच्चे हम पर हाथ भी नहीं उठा सकते।

चित्र: अंशिका चौधरी, दूसरी, कम्पोजिट स्कूल, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश



वैदेही करे, आठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

बड़े लोग मारते हैं अक्सर बच्चों को क्योंकि उन्हें लगता है बड़े हैं वो कभी लगता है कि मैं बड़ी होती तो मैं भी उन्हें मारती ज़ोरों से समझ सकती हूँ मैं कि बड़े हैं वो पर हमारा भी कोई मन है हाँ गलती करती हूँ मैं भी पर वो समझा भी तो सकते हैं पर बड़े लोग अक्सर मारना पसन्द करते हैं

क्यों क्यों

चित्र: मुकुन्द आडकर, छठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र



राधा यादव, छठवीं, शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला बिजराडीह, भाटापारा

लोगों को इसलिए हाथ उठाना पड़ता है क्योंकि बच्चे बड़ों की बात नहीं मानते हैं और बहुत शैतानी करते हैं। बच्चे गाली देते हैं और लड़ाई-झगड़ा करते हैं तो बड़ों को हाथ उठाना पड़ता है। जब कोई बच्चा अपने बड़ों की बात नहीं मानता तब भी हाथ उठाना पड़ता है। जब बच्चे बिना बताए घर से जाते हैं तो माँ डाँटती हैं या तो हाथ उठाती हैं।

दीपिका, आठवीं, राजकीय इंटर कॉलेज,
कालेश्वर, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

बड़ों का मूड खराब होता है तो वे अपने से बड़ों को थोड़े ना मारेंगे। बच्चों पर हाथ साफ करना आसान जो होता है।

श्रीक विनायक गावडे, छठवीं, महिन्द्रा वर्ल्ड पब्लिक स्कूल,
चंगलपेट, तमिळनाडु

चित्र: दुर्गा वर्मा, चौथी, कम्पोजिट स्कूल, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

इसके कई कारण हैं।

उम्रः पहला कारण है बच्चों की उम्र। बच्चे उम्र में बड़ों से छोटे होते हैं तो वे अपने ऊपर होने वाले अत्याचार को समझ नहीं पाते। और फिर समझ भी जाएँ तो कुछ कर नहीं पाते, अपनी दुर्बलता की वजह से।

शक्ति का उपयोग: वयस्कों के पास अक्सर बच्चों पर आज़माने के लिए शारीरिक और भावनात्मक शक्ति होती है, जो नियंत्रण करना आसान बनाती है।

परिणामों की कमी: कुछ मामलों में बड़े यह मान सकते हैं कि हाथ उठाने या मारपीट के इस कार्य के लिए उन्हें किन्हीं महत्वपूर्ण परिणामों का सामना नहीं करना पड़ेगा, विशेषकर तब जब बच्चा बहुत डरा हुआ हो या बहुत छोटा हो पलटकर कछ भी बोलने के लिए।

तनाव और क्रोधः कुछ व्यक्ति बच्चों पर अपना तनाव और क्रोध निकाल सकते हैं क्योंकि बच्चों को सबसे ज्यादा कमज़ोर और वापिस लड़ने में कम सक्षम माना जाता है।

सांस्कृतिक-सामाजिक मानक: दुर्भाग्य से कुछ संस्कृतियाँ या समाज शारीरिक दण्ड को स्वीकार करके अनुशासन के रूप में इसे बढ़ावा देती हैं।

सहानुभूति की कमी: कुछ मामलों में बड़े बच्चों पर मारपीट के भावनात्मक प्रभाव को समझने या उनसे सहानुभूति रखने में संघर्ष कर सकते हैं।

अपमान का चक्रः इस बात की अधिक सम्भावना है कि जिन लोगों से बचपन में दुर्योगहार किया गया है, वे चक्र को बनाए रखें और बच्चों के साथ अपनी शक्ति का दरूपयोग करें।



रेशमी, चौथी, शासकीय प्राथमिक शाला, खैरी, भाटापारा,
बलौदा बाजार, छत्तीसगढ़

क्योंकि बड़े लोग सोचते भी नहीं हैं कि छोटे बच्चों पर हाथ उठाते हैं तो उन्हें बुरा लगता है कि नहीं। और वह बच्चे बड़े हो जाते हैं तब भी कुछ नहीं करते। वह सोचते हैं कि यह आदमी मेरे ऊपर हाथ उठाया है और उन्हें बहुत बुरा लगता है कि एक बार मुझे वो लोग समझा देते तो मैं अभी इस बात को अपने मन में नहीं रखता। और बड़े लोग अपने मन में सोचते हैं कि बच्चों पर हाथ उठाना मेरा अधिकार है क्योंकि मैं तो बड़ा हूँ और बच्चे मुझसे कई गुना छोटे हैं। यह गलत बात है कि छोटा बच्चा कोई गलत काम करता है तो उसे डाँट देते हैं या हाथ उठा देते हैं। जब बड़ों से कोई चीज गिर जाती है तो उसे डाँटते क्यों नहीं हैं?



कुलदीप दास

अनुवाद: कविता तिवारी



असम के बरपेटा ज़िले की ‘काहिनी चिल्ड्रन्स लाइब्रेरी’ में दौल उत्सव के अवसर पर ‘मने-बने-अबीर’¹ कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में बरपेटा के 50 बच्चे शामिल हुए। उन्होंने फूलों और पत्तियों जैसी पौधों से मिलने वाली प्राकृतिक सामग्रियों से रंग बनाने की कला सीखी। रंग निकालने जैसी प्रायोगिक गतिविधियों के ज़रिए इस कार्यशाला में इको-फ्रेंडली रचनात्मकता पर ज़ोर दिया गया। इसकी प्रेरणा कलाकार-लेखक कनक शशि की किताब ओ पेड़ रंगरेज़ से ली गई। रंग बनाने के लिए चुकच्चर, पलाश, आम की पत्तियों, हल्दी, अपराजिता के फूल ओ बोगनवीलिया का इस्तेमाल किया गया।

कार्यशाला में एक पारम्परिक होली गीत भी प्रस्तुत किया गया। इसने उत्सव के माहौल में और अधिक उमंग व रंग भर दिए। इससे बच्चों को सीखने का मौका तो मिला ही, यह उनके लिए मनोरंजक भी बन

¹असमिया भाषा में मने यानी मन, बने यानी वन और अबीर यानी रंग होता है।

गया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य अपने आसपास के प्राकृतिक परिवेश को करीब से जानना था। और यह समझना था कि इस परिवेश ने हमें असीम संसाधन दिए हैं। इससे हमें अपनी संस्कृति को इको-फ्रेंडली ढंग से मनाने और भविष्य में भी इस परम्परा को जारी रखने में मदद मिलती है।

कार्यशाला स्थल को प्रख्यात गायक डॉ. भूपेन हजारिका, बरपेटा के सम्मानित लेखक गोकुल पाठक, सांस्कृतिक कार्यकर्ता प्रमोद रंजन व कवि सुशील शुक्ल की कविताओं व होली गीतों से सजाया गया था। बच्चों ने पहली बार प्राकृतिक रंगों से अपनी पेंटिंग बनाई थीं। यह उनके लिए बेहद मज़ेदार अनुभव था। इसने हरेक बच्चे के मन को असीम जिज्ञासा से भर दिया। ‘काहिनी चिल्ड्रन्स लाइब्रेरी’ रचनात्मक और सांस्कृतिक पहलों के माध्यम से बच्चों के मानसिक विकास के लिए लगातार प्रयासरत् है। गौरतलब है कि ये बच्चे ‘काहिनी लाइब्रेरी’ के नियमित पाठक हैं।





ओ पेड़ रंगरेज़

कनक शशि, कविताएँ सुशील शुक्ल
एकलव्य प्रकाशन

ओ पेड़ रंगरेज़ किताब में विभिन्न फूलों, फलों, पत्तियों आदि से प्राकृतिक रंग बनाने की कई गतिविधियाँ शामिल हैं। इन रंगों को बनाने के आनन्द में रमे रहने की ऐसी और गतिविधियों के लिए तुम इस किताब को मँगवा सकते हो।
पता है: <https://eklavyapitara.in>



भारतीय प्रेस और नियतकालिक पत्रिका रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 2023 की थारा 4 (2) के अन्तर्गत मासिक पत्रिका 'चकमक बाल विज्ञान पत्रिका' से सम्बन्धित जानकारी

प्रकाशन का स्थान : भोपाल

प्रकाशन की अवधि : मासिक

प्रकाशक का नाम : टुलटुल बिस्वास

राष्ट्रीयता : भारतीय

पता : जमनालाल बजाज परिसर

जाटखेड़ी, भोपाल - 462026

मुद्रक का नाम : आर के सिक्युप्रिंट प्रा. लि.

राष्ट्रीयता : भारतीय

पता : प्लॉट नं. 15-बी

गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया
गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021

सम्पादक का नाम : विनता विश्वनाथन

राष्ट्रीयता : भारतीय

पता : जमनालाल बजाज परिसर

जाटखेड़ी, भोपाल - 462026

उन व्यक्तियों के नाम

जिनका स्वामित्व है : रैक्स डी. रोजारियो

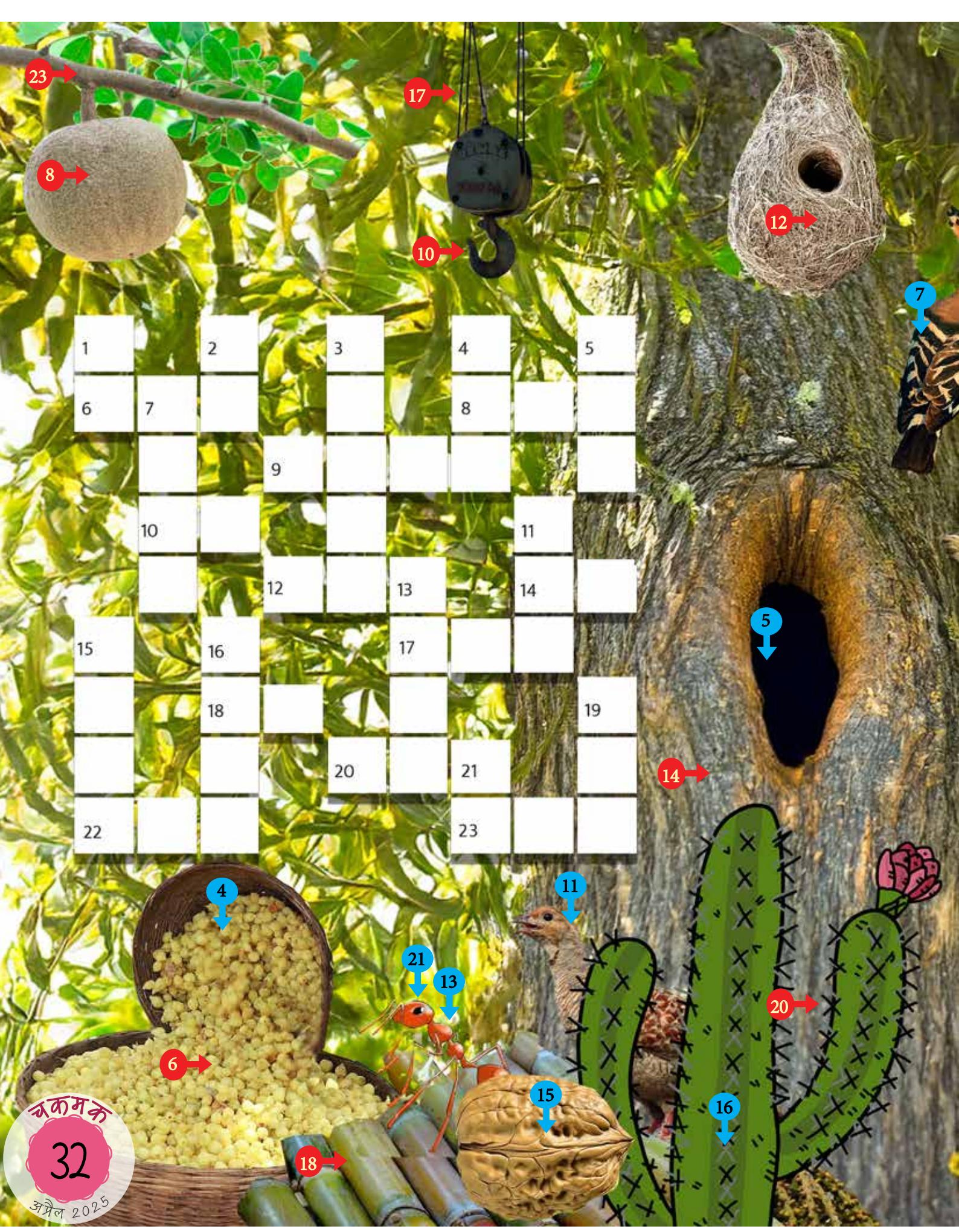
राष्ट्रीयता : भारतीय

पता : जमनालाल बजाज परिसर

जाटखेड़ी, भोपाल - 462026

मैं टुलटुल बिस्वास यह घोषणा करती हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

(प्रकाशक के हस्ताक्षर) टुलटुल बिस्वास 25 मार्च 2025



सुडोकू 83

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो।

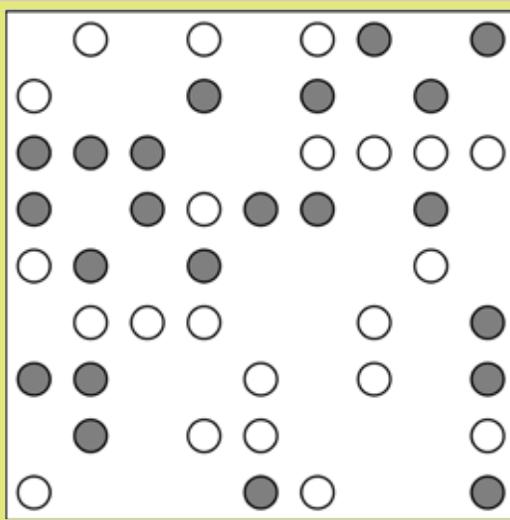
6		2	3	4	5			1
7		9		1	6			
		8	6	7	2	3		
7	2	1	6	5			9	4
4	3	5			9		6	
9			2	3				7
5	1		4	8		9	2	
2		8						
3		9				4		



चित्र

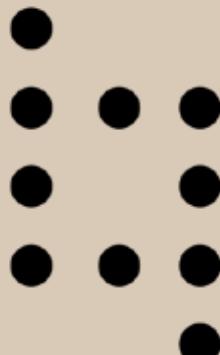
33
अप्रैल 2025

1. इस चित्र में दिए काले व सफेद गोलों की जोड़ी बनाओ। पर ध्यान रखना कि तुम केवल आड़ी या खड़ी लाइनों का इस्तेमाल कर सकते हो। और तुम्हारी लाइनें एक-दूसरे को या किसी भी गोले को काटते हुए नहीं जानी चाहिए। साथ ही हरेक गोला केवल एक ही जोड़ी में शामिल हो।



5. दिए गए सिक्कों को इस तरह जमाओ कि चार सिक्कों की चार लाइनें बन जाएँ, पर ध्यान रखना कि-

- तुम केवल तीन सिक्कों को इधर-उधर कर सकते हो।
- सिक्कों को एक-दूसरे के ऊपर नहीं रख सकते।
- सिक्कों के केन्द्र एक ही सीध में होने चाहिए, पर एक ही लाइन के सिक्कों के बीच की दूरी अलग-अलग हो सकती है।



7.

दी गई घिड में कई सारे पकवानों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

2. चार्ली के पास 15, 13, 11, 10, 9, 8, 4, 2, 2 व 1 किलो के कुल 10 बक्से हैं। उसे इन्हें 3 बड़े कॉर्टन में पैक करना है। और किसी भी कॉर्टन में 25 किलो से ज्यादा का वजन नहीं रखा जा सकता है। क्या तुम बक्सों को रखने में चार्ली की मदद कर सकते हो?



3. आमना ने गेंद को इस तरह फेंका कि वह 10 मीटर की दूरी तय करने के बाद भी बिना किसी चीज़ से टकराए उसके पास वापिस आ गई। यह कैसे हो सकता है?

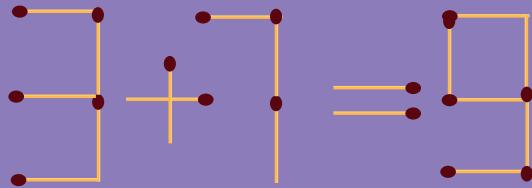
4. एक छोटे-से करबे में दो ही नाई हैं। एक के बाल बहुत अच्छी तरह कटे हुए हैं और दूसरे के बहुत ही बेकार। तुम दोनों में से किसके पास बाल कटवाने जाना चाहोगे?

6. एक पिंजरे में 1 मुर्गी है। एक तरफ 10 मीटर की दूरी से एक शेर आ रहा है और दूसरी तरफ 7 मीटर की दूरी से एक कुत्ता आ रहा है। सबसे पहले मुर्गी को कौन खाएगा?

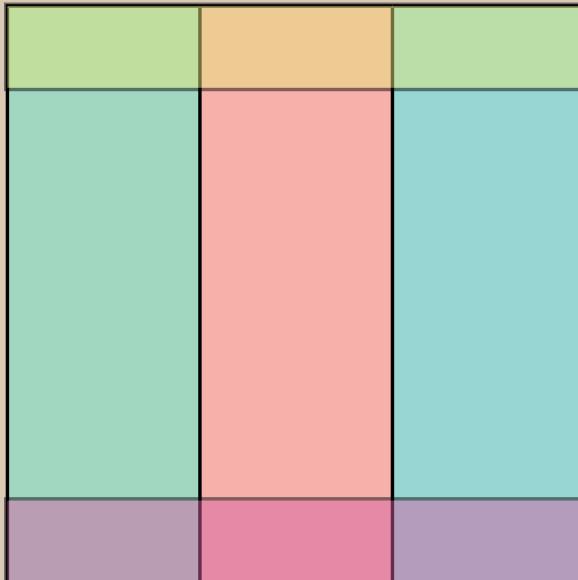
मो	छो	ला	भ	टू	रा	पु	ला	व
मो	टा	नू	पू	ला	य	पि	ज़ा	डो
आ	इ	ड	ली	री	ता	स	मो	सा
घे	ला	ल्स	दा	ल	बा	टी	बि	लि
गु	व	बि	का	स्सी	लू	पो	उ	द्वी
ब	र्ग	र	सें	द	शा	चा	त्त	चो
गु	जि	या	व	सी	ही	ट	प	खा
ज	का	नी	ई	क	बा	ब	म	ला
व	डा	पा	व	र	फा	फ	डा	चा

काथा पच्ची

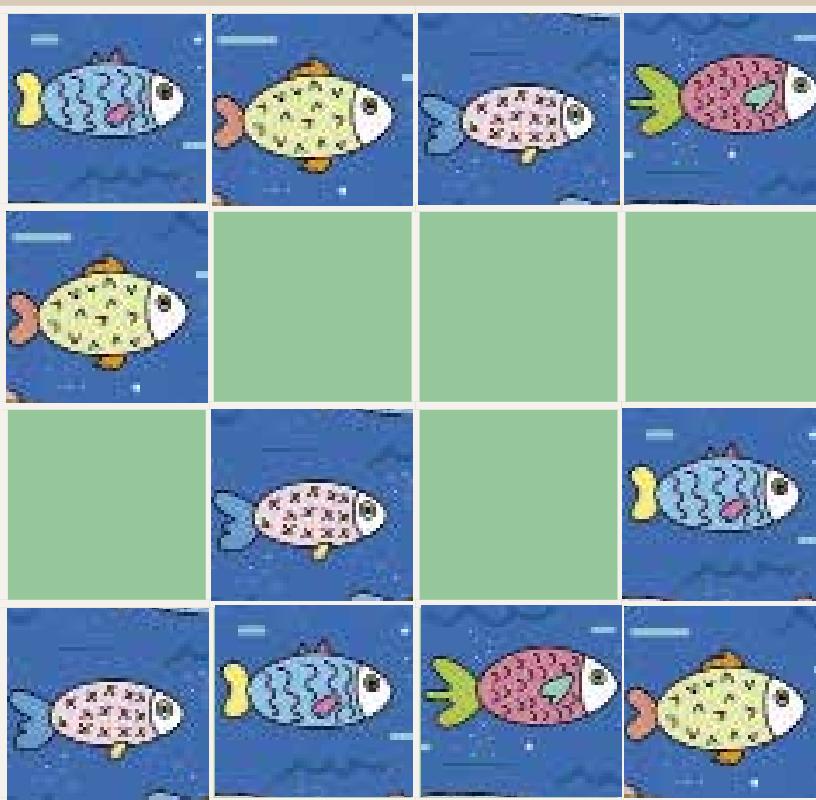
8. केवल एक तीली को इधर-उधर करके इस समीकरण को सही करना है, कैसे करोगे?



9. इस चित्र में कितने चौकोर हैं?



10. दी गई श्रिंखला की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग मछली आनी चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-सी मछलियाँ आएँगी?



मैं शूट तो करता हूँ, पर मारता नहीं हूँ। बताओ मैं कौन हूँ?

(अस्मर्क)

कौन है जिसके बूढ़े हो जाने पर भी लोग उसे जवान ही कहते हैं?

(कनिंजि)

सीधी होकर बेल कहाए,
उलटी होकर ताल सुनाए

(ठिठु़)

मैं ऊपर-नीचे जाती हूँ, फिर भी वहीं रहती हूँ। मैं कौन हूँ?

(झिञ्चि)

सोने की वह चीज़ है
पर बेचे नहीं सुनार
मोल तो ज्यादा है नहीं
बहुत है उसका भार

(झाप्पाज)

जो तुझ में है वह
उसमें नहीं, जो झाण्डे
में है, वो डण्डे में नहीं

(झ मङ्गड)

भूत बंगला

प्रगति पंवार
सातवीं, प्रगति
शिक्षण संस्थान
फलटण, सतारा
महाराष्ट्र

मेरी दादी ने मुझे एक राज की बात बताई। उन्होंने बताया कि हमारे गाँव में एक भूत बंगला था। वो हमारे घर से बस थोड़ी ही दूर था।

एक दिन ज़ोरों की बरसात हो रही थी। लाइट चली गई थी। बिजली कड़क रही थी। घर में सिर्फ मेरी दादी और दादी की माँ थीं। दादी का भाई अब तक घर नहीं आया था। दादी की माँ बहुत परेशान थीं। थोड़ी देर में दादी का भाई घर पर आ गया। तब मेरी दादी बाहर मोमबत्ती लाने के लिए गई थीं।

जब दादी घर आई तो वो बहुत घबराई हुई थीं। दादी की माँ ने दादी से पूछा कि क्या हुआ। दादी घबराती हुई बोलीं कि मैं जब मोमबत्ती लाने गई ना तो मैंने भूत बंगले से आवाज सुनी। मैं उस बंगले को देख रही थी तो मुझे डर लगने लगा। मैं घर आने लगी तो मुझे लगा कि कोई मेरा पीछा कर रहा है।

तो मैंने एक लकड़ी ली और बिना देखे वो लकड़ी पीछे फेंक दीं। जब मैं लकड़ी फेंककर भागने लगी तो मैंने देखा एक आदमी उलटा-उलटा चलकर मेरे पास आ रहा है। मैं जोर-से भागी और घर पहुँची।

खेल में चोट

कायरा वेद

चौथी, महिन्द्रा वर्ल्ड पब्लिक स्कूल, चंगलपेट, तमिलनाडु

एक सुहानी सुबह मैं अपने दोस्तों के साथ खेल रही थी। तभी मैं अचानक-से गिर पड़ी। मैं बहुत डर गई क्योंकि मेरे पैर से खून निकलने लगा था। मैं रोने लगी। मेरे दोस्त मेरी ओर भागे चले आए। उन्होंने मेरी मदद की। फिर उन्होंने मेरी मम्मी को बुलाया। वे दवाई लिए-लिए दौड़ी आई। उन्होंने मेरे पैर में पटटी की। थोड़ी देर में मैं शान्त हो गई और वापस खेलने लग गई। हम सब दोस्तों ने मिलकर बहुत मज़ा किया। हमने बहुत-से खेल खेले, जैसे कि लुकाछिपी, खो-खो, कबड्डी, रुमाल झपट्टा और फुटबॉल आदि।

पत्तों में अगर जान होती

अथा मोहिते

तीसरी, मुण्डले इंग्लिश मीडियम स्कूल
नागपुर, महाराष्ट्र

पत्तों में अगर जान होती
तो क्या होता?

बिखर जाते!

अगर उनके पैर होते
तो वो चलते
किसी के घर जाते

अगर उनके हाथ होते
तो वो खुद अपना
खाना बनाते

उनको शरीर होता
तो वो घर बना सकते
खुद का!



चित्र: सोहेल, पाँचवीं, अजीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

मेरे मोहल्ले में एक भी लड़का नहीं है। तो मैं रोज़ स्कूल जाता हूँ कि वहाँ थोड़ा खेल सकूँ। स्कूल में रहता हूँ तो मजा आता है। लेकिन स्कूल से घर जाता हूँ तो स्कूल की बहुत याद आती है। मैं फोन उठाकर फ्रीफायर खेलने लगता हूँ। कुछ देर खेलने के बाद मम्मी कहती हैं, “खेलना है तो अकेले ही खेलो।” मैं रोते हुए कहता हूँ, “मोहल्ले में कोई लड़का ही नहीं है।” फिर मैं अपना कपड़ा धोने लगता हूँ और घर के कामों में माँ का हाथ बँटाता हूँ। सुबह होती है तो मेरा दिल गार्डन-सा होने लगता है। और फिर स्कूल से लौटने पर वही बोरिंग दिन होता जाता है।

बोरिंग दिन

धर्मन्द्र

आठवीं, कम्पोजिट स्कूल, धुसाह
बलरामपुर, उत्तर प्रदेश



चित्रः हिमांशी आर्या, आठवीं, आरोही बाल संसार, ग्राम प्यूडा, नैनीताल, उत्तराखण्ड



चित्रः हर्षली सोमेश्वर येलेवार, छठवीं, छोटूभाई पटेल हाई स्कूल, चन्दपुर, महाराष्ट्र



छत

दीपक बोहरा

दूसरी, विद्या विकास हाई स्कूल, बेंगलूरु, कर्नाटका

गाँव के मज़े

इरफान

पाँचवीं, शासकीय हाई स्कूल, रफीकिया, भोपाल, मध्य प्रदेश

मुझे छत बहुत पसन्द है। छत से पूरा मोहल्ला दिखता है। छत चाँद-तारों के ज्यादा करीब होती है। छत पर हवा तेज़ चलती है। इसलिए पतंग बढ़िया उड़ती है। छत पर ज्यादा सामान नहीं होते। इसलिए वहाँ मर्स्ती से भागदौड़ की जा सकती है। दोपहर में छत गरम हो जाती है। कपड़े और आचार छत पर अच्छे-से सूखते हैं। बारिश सबसे पहले छत पर आती है। मेरा घर टीन का है। उसका किराया पाँच हजार है। मेरे घर में छत नहीं है।

मेरा गाँव बहुत अच्छा और प्यारा है। गाँव में बहुत अच्छी ठण्डी-ठण्डी हवा चलती है। मेरे गाँव में बहुत हरियाली है। मेरे गाँव में बहुत सारे पेड़ हैं। हम पेड़ पर चढ़कर बहुत मरस्ती करते हैं। गाँव में मेरे बहुत सारे दोस्त हैं। और मैं बहुत देर तक खेलता हूँ। जब शाम होती है तो मैं नहाने लगता हूँ। फिर घर पर जाकर कपड़े बदलता हूँ। फिर मैं खाना खाने के लिए बैठ गया। ऐसा ज़बरदस्त खाना बना था कि फाइव स्टार होटल का खाना हो। फिर मैं खाना खाकर छत पर सो गया।

अजीब घटना

अनिकेत रावत
पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय कल्ली
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

मैं एक बार अपनी नानी के घर गया था। वहाँ मैं टहल रहा था। तभी मुझे एहसास हुआ कि मेरे पीछे कोई चल रहा है। जब मैंने पीछे मुड़कर देखा तो कोई नहीं था। मैं फिर वहाँ पर रुक गया तो वहाँ अजीब घटना हुई। मैंने देखा कि एक आदमी अपने चाकू मार रहा था। मैं बहुत घबरा गया था। तभी मेरी नानी आ गई और मैं घर चला गया।



चूहे की होली

कामिनी

पाँचवीं, प्राथमिक शाला गोगियापारा, तरेंगा, भाटापारा, छत्तीसगढ़

एक पालतू चूहा था। उसका नाम हनी था। उसको होली खेलना बहुत पसन्द था। वह होली के दिन एक झूम में रंग घोरा और सबके ऊपर छीटने लगा।

मैंने बहाना बनाया...

जatin
छठवीं, अंजीम प्रेमजी
स्कूल, बाड़मेर, राजस्थान

एक रात मैं उठा, पानी पिया और फिर जाकर सो गया। तब रात के 3 बजे रहे थे। उस दिन रविवार था। मैं हमेशा की तरह बहुत देर तक सोता रहा। जब मैं उठा तो मम्मी मेरे भाई को डॉट रही थीं। तब मैंने पूछा, “उसको क्यों डॉट रही हो?” मम्मी ने जवाब दिया, “इसने रात में उठकर कूलर बन्द कर दिया।” उससे पहले मैंने मम्मी को बोल रखा था कि रात को मैं उठा था। मम्मी ने मेरी तरफ देखा और मुझे डॉटने लगीं कि तूने बन्द किया होगा कूलर।

अगले दिन मैंने मम्मी से बदला लेने का सोचा। और पेट दर्द का बहाना करके टीवी पर मेरा पसन्दीदा कार्टून देखा। पूरे दिन मम्मी मेरी सेवा करती रहीं। कभी नींबू पानी बनातीं, कभी पराठे, कभी कुछ और। पूरा दिन मैंने मौजमस्ती की और बैठा रहा घर पर। हालत तो तब खराब हुई जब पापा ने अस्पताल जाने के लिए कहा। लेकिन मैं भी नहीं रुका और बोला कि अब पेट दर्द ठीक हो गया है। पापा बिना कुछ बोले बाहर चले गए।

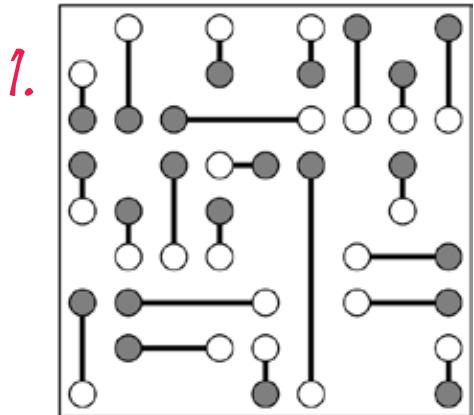
थोड़े दिनों बाद मैंने मम्मी को खुद बता दिया कि उस दिन मैंने बहाना बनाया था। मुझे लगा था मम्मी का मन शान्त होगा। लेकिन यह बताने के बाद तो मम्मी ने मुझसे घर के काम तक करवा लिए। उस दिन के बाद मैंने कभी बहाना नहीं बनाया मम्मी-पापा के साथ।



चित्र: अजाब, अंजीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

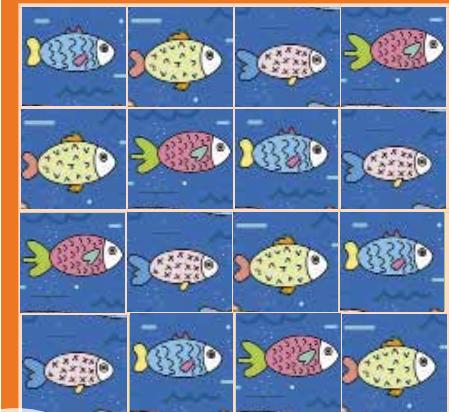


काश्या पर्दी जवाब



मो	छो	ला	भ	टू	सा	पु	ला	व
मो	या	नू	पू	ला	य	पि	ज्जा	डो
आ	इ	ड	ली	री	ता	स	मो	सा
घे	ला	त्स	दा	ल	बा	टी	बि	लि
गु	व	बि	का	स्सी	लू	पो	उ	ट्टी
ब	र्ग	र	सें	द	शा	चा	त	चो
गु	जि	या	व	सी	ही	ट	प	खा
ज	का	नी	ई	क	बा	ब	म	ला
व	ड़ा	पा	व	र	फा	फ	ड़ा	चा

10.



क्रकम क्र

42

अप्रैल 2025

2. इसके कई जवाब हो सकते हैं।

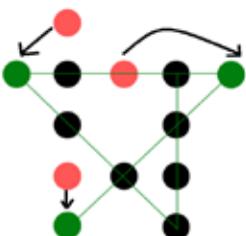
दो यहाँ दिए गए हैं:

{कैरेट 1}, {कैरेट 2}, {कैरेट 3}

{15,10}, {13,8,4}, {11,9,2,2,1}

{15,10}, {13,11,1}, {9,8,4,2,2}

5.



3. उसने गेंद ऊपर की ओर उछाली थी।

4. चूँकि कस्बे में दो ही नाई हैं, इसलिए

बहुत चांस हैं कि दोनों एक-दूसरे

से अपने बाल कटवाते होंगे। ऐसे में

उसके पास जाना चाहिए जिसके

बाल बेकार कटे हैं क्योंकि उसने

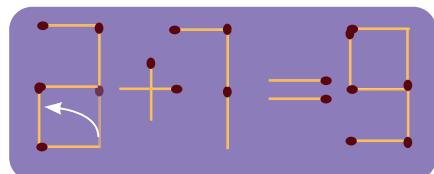
अपने बाल दूसरे वाले नाई से

कटवाए होंगे। और ज़ाहिर है कि

दूसरा नाई बाल अच्छी तरह नहीं

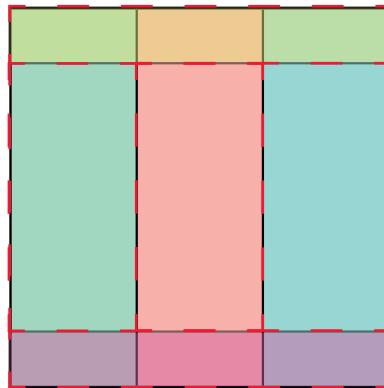
काटता है।

6. कोई भी नहीं। क्योंकि मुर्गा तो पिंजरे में है ना।



9.

3, चित्र में इन्हें
लाल रेखाओं में
दिखाया गया है।

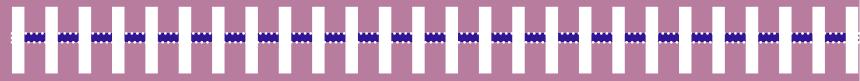


सुडोकू-83 का जवाब

6	9	2	3	4	5	7	8	1
8	7	3	9	2	1	6	4	5
1	5	4	8	6	7	2	3	9
7	2	1	6	5	8	3	9	4
4	3	5	1	7	9	8	6	2
9	8	6	2	3	4	1	5	7
5	1	7	4	8	6	9	2	3
2	4	8	7	9	3	5	1	6
3	6	9	5	1	2	4	7	8



तुम भी जानो



मीठे के लिए हमेशा क्यों तैयार?

भरपेट खा लो, इतना कि लगे कि अब तो एक भी निवाला गले से नहीं उतरेगा। फिर भी यदि कोई मीठे की बात करे तो तुम तुरन्त हामी भर देते हो। मीठे के लिए हमेशा पेट में जगह कैसे बन जाती है? शोध से पता चला है कि चूहों का मस्तिष्क मीठे को महज़ चीनी के स्वाद से ही नहीं जोड़ता, बल्कि उसके साथ खुशी का एहसास भी जोड़ देता है। यानी मीठा खाना सिर्फ़ स्वाद की बात नहीं रही। यह हमारी खुशी से भी जुड़ा हुआ है। यह शोध तो चूहों पर किया गया है। लेकिन मस्तिष्क की कुछ प्रक्रियाएँ चूहों और मनुष्यों में समान होती हैं तो ये बात हमारे लिए भी लागू हो सकती है।



कृमि के शिकारियों से लड़ रही हैं कुछ महिलाएँ

दक्षिणी आन्ध्र प्रदेश की पुलिकट झील के खारे पानी में 10 किस्म के कुछ ऐसे कृमि (ब्रिसलवर्म) हैं जो वहाँ की कई मछलियों, केकड़ों और अन्य जीवों का मुख्य आहार हैं। इन कृमियों का स्थानीय शिकारी बड़े पैमाने पर अवैध शिकार करते हैं। इससे झील के पारिस्थितिकी तंत्र (ecosystem)को गम्भीर नुकसान पहुँचता है। साथ ही वहाँ के मछुआरों का भी नुकसान होता है जो रोज़ाना कुछेक मछली-केकड़े पकड़कर अपना गुजारा करते हैं। सो अपनी झील और उसके जीवों को बचाने पुलिकट के आसपास रहनेवाली महिलाओं ने अब वहाँ का पहरा शुरू किया है ताकि कृमियों का शिकार स्वाभाविक तौर से धीरे-धीरे हो, बनिस्बत इसके कि मनुष्य के लालच के कारण वे तेज़ी-से विलुप्त हो जाएँ।



ब्लॉग

क्रकमक्र

43

अप्रैल 2025

पलाश पर पहला फूल कब खिला, यह कहना मुश्किल होता है। अचानक जब दसियों फूल अपनी काले, मखमली खोल से बाहर निकलते हैं, तब उन पर से नज़र हटाना मुश्किल हो जाता है। एक सूखा-सा भूरे रंग का पेड़, जिस पर नाम मात्र की पत्तियाँ होती हैं, वो भी पुरानी और बदरंग। लेकिन उसी पेड़ की हर डाल पर काली कलियों से निकले ये फूल, पलाश के रंग में रँगने लगते हैं। हम केसर के रंग को केसरिया और नारंगी के रंग को नारंगी कहते हैं, तो उस हिसाब से पलाश का रंग पलाशिया ही हुआ ना? इन फूलों में कोई खुशबू नहीं होती, बल्कि होता है तो बस ताजगी से भरा एक रंग। ऐसा लगता है कि अगर इसे छुआ तो यह रंग आँखों के साथ-साथ हाथों पर भी उत्तर आएगा।

पलाश से ही शायद हमने उत्सवों में सजावट करना सीखा है। बहरहाल, पलाश पर दावत है, सभी के लिए। और बड़े करीने से पत्तल खुद पलाश ने ही बिछाई है। जैसे पंगत में बच्चों को पहले बैठाया जाता है सुबह-सुबह सबसे पहले चींटियाँ, मधुमक्खियाँ, शकरखोर चिड़ियाँ, दर्जिन चिड़ियाँ और बबूना आते हैं। फिर बुलबुल, सात भाई, तोते, टुझ्याँ, टकाचोर, कोतवाल और कई अन्य पक्षी आते हैं। बन्दर और लंगूर अपना कोई समय तय नहीं करते। उनका जब मन होता है, वे आकर फूलों का रस चूसते हैं। नन्हे बन्दर कई तरह के करतब करते हुए बड़ों की नकल कर इनका रस चूसना सीखते हैं। ये खाते कम हैं, गिराते ज्यादा हैं। नीचे गिरे हुए फूल भी बेकार नहीं जाते। चीतल, सूअर, नीलगाय, साँभर, बकरी, गाय पत्तल पर बिछे फूलों को खाने के लिए आते हैं।

जब तक पेड़ पर फूल रहते हैं, नीचे सूखे पत्तों पर गिरते फूलों की आवाज लगातार आती रहती है। लगता है जैसे फूलों की बारिश हो रही हो। धीरे-धीरे, पलाशिया रंग के फूलों की जगह सुन्दर हल्के हरे रंग की नहीं फलियाँ ले लेती हैं। अब सभी को अगले साल फूलों का इन्तज़ार करना होगा। पेड़ अब साल भर तैयारी करेगा, रंग बनाएगा, और एक-एक फूल को रंगेगा। इस सब में समय तो लगता है। लेकिन अगले बरस फिर से यह दावत होगी, और न्योता सभी के लिए है।

पलाश

कनक शशि

चित्र: शुभम लखेरा

